।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचारपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 अक्टूबर 2019 वर्ष 12 अंक 6

कुल पृष्ठ 28 वार्षिक शुल्क : ₹ 80/- (भारतवर्ष में), ₹ 800/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 7/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

पूर्ण विश्वास सदा फलदायी

जिन मनुष्यों का भगवान, सन्तों और सद्गुरु में पूर्ण विश्वास, श्रद्धा और प्रेम है, उनकी भगवान देश-परदेश में, लोक-परलोक में रक्षा करता है. प्रेमियों की पुकार सुनकर, भगवान अनन्त रूप धारण कर, स्वयं उनकी रक्षा करते हैं, क्योंकि भगवान भक्तों का दुःख सहन नहीं कर सकते.

शैर : **दुःखी प्यारे देख भगत को, मन में मैं घबराता हूं।**
उसके हित मैं वैकुण्ठ त्यागे, पांव नंगे चल आता हूं।।

जैसे कि भगवान ने आकर द्रोपदी की रक्षा की और भक्त प्रह्लाद की रक्षा की. उसी प्रकार एक कबूतर पेड़ पर बैठा था. वहाँ पर एक शिकारी (बहेलिया) आया, उसने तीर कमान खींचकर कबूतर की ओर निशाना साधा. उस समय एक शहल बाज (चील) भी उस पेड़ पर मँडराने लगा. कबूतर ने सोचा, अगर पेड़ से उड़ जाता हूँ तो 'बाज' मुझे मार डालेगा और अगर इसी पेड़ पर बैठा रहता हूँ तो चिड़ीमार मुझे मार डालेगा. कबूतर ने आँखें बन्द करके भगवान को याद किया. उसने मन ही मन में कहा, हे प्रभो! मेरी रक्षा करो.

प्रभु की ऐसी लीला बनी कि जहाँ पर चिड़ीमार खड़ा था, उसके पास ही एक बिल से साँप निकला और उसने चिड़ीमार को डस लिया. चिड़ीमार का निशाना, एकाएक डंक लगने के कारण चूक गया और उसकी कमान से निकला तीर जाकर बाज को लगा. कबूतर दोनों ओर से बच गया. इस प्रकार भगवान आकर भक्तों की रक्षा करता है. इसलिए सदैव प्रार्थना करनी चाहिये. उस समय सद्गुरु महाराज जी ने प्रार्थना का यह भजन कहा-

।। भजन राग टोड़ी ।।

टेकः विपत्ति मेरी दूर करो महाराज।।

1. भूप हरिश्चन्द धर्म के कारण, दीना सर्व समाज। काट कष्ट तिहं दर्शन दीया, होया जय आवाज।।
2. दुर्योधन जब द्रोपदा को, करत नगन मध्य राज। सहस्र वस्त्र दे तब तांकी, राखी सभा में लाज।।
3. बच्चे बिल्ली के रखे आंव में, कुम्हारी के काज। नरसिंह हो हरनाकश मारा, पत राखी पहलाज।।
4. कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, सुनो ग़रीब निवाज़। प्रत्यक्ष अपना दर्शन दीजे, पाऊँ सुख स्वराज।।

(पवित्रतम सद्ग्रंथ सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत के तृतीय व अंतिम भाग के पृष्ठ 324-325 से)

व्रत-पर्व-उत्सव

कार्तिक कृष्ण पक्ष

17 अक्टूबर 2019-गुरुवार-श्रीगणेश चतुर्थी-करवाचौथ व्रत चन्द्रोदय रात 7:58 बजे

18 अक्टूबर 2019-शुक्रवार-तुला संक्रांति

21 अक्टूबर 2019-सोमवार-अहोई अष्टमीव्रत

24 अक्टूबर 2019-गुरुवार-रम्भा एकादशी व्रत

25 अक्टूबर 2019-शुक्रवार-प्रदोष व्रत, धनतेरस

26 अक्टूबर 2019-शनिवार-नरक (रूप) चौदस, छोटी दीवाली

27 अक्टूबर 2019-रविवार-दीपावली, दीपोत्सव, श्राद्ध की अमावस्या

28 अक्टूबर 2019-सोमवार-स्नान-दान की सोमवती अमावस, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टूबर 2019-मंगलवार-चन्द्रदर्शन, भाईदूज, कार्तिकोत्सव श्री अमरापुर दरबार सहित सभी आश्रमों पर शुरू

31 अक्टूबर 2019-गुरुवार-वैनायकी श्री गणेशचतुर्थीव्रत

02 नवम्बर 2019-शनिवार-सद्गुरु टेऊँराम चौथ

04 नवम्बर 2019-सोमवार-गोपाष्टमी, सद्गुरु टेऊँराम गोशाला, जयपुर में गोमेला

05 नवम्बर 2019-मंगलवार-अक्षय (आंवला) नवमी, पंचकारम्भ रात्रि में 6:53 बजे से

08 नवम्बर 2019-शुक्रवार-हरिप्रबोधिनी एकादशी

09 नवम्बर 2019-शनिवार-प्रदोष व्रत

10 नवम्बर 2019-रविवार-पंचक समाप्त रात्रि में 6:02 बजे

11 नवम्बर 2019-सोमवार-वैकुण्ठ चतुर्दशी

12 नवम्बर 2019-मंगलवार-कार्तिक पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत, श्री गुरुनानक देव जयंती महापर्व, कार्तिक स्नान पूर्ण

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

15 नवम्बर 2019-शुक्रवार-श्री गणेश चतुर्थी व्रत चंद्रोदय 7:31

17 नवम्बर 2019-रविवार-वृश्चिक संक्रांति

22 नवम्बर 2019-शुक्रवार-उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त)

23 नवम्बर 2019-शनिवार-एकादशी व्रत (वैष्णव)

24 नवम्बर 2019-रविवार-प्रदोष व्रत

26 नवम्बर 2019-मंगलवार-अमवास्या

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर 2019-गुरुवार-चन्द्रदर्शन

30 नवम्बर 2019-शनिवार-वैनायकी चतुर्थी व्रत

दीपावली पूजन मुहूर्त : तारीख २७ अक्टूबर रविवार को शाम ५ बजकर ३३ मिनट से उत्तम मुहूर्त है. शाम ६:०४ से ८:३६ तक प्रदोष काल, सायं ७:१५ से रात्रि ९:१५ तक वृषभ काल, चार पूजा मुहूरत ६:०४ से रात्रि १०:४८ तक है. व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में दिन में लक्ष्मी चौघड़िया पूजा दोपहर १ बजकर १३ मिनट से ३ बजकर १३ मिनट तक. पूजन प्रारम्भ हो जायेगा जो शास्त्र सम्मत है.

या रक्ताम्बुजवासिनी विलासिनी चण्डांशु तेजस्विनी। या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोल्हादिनी।।
या रत्नाकरमन्थनात्प्रगंटीता विष्णोस्वया गेहिनी। सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती।।

जो लाल कमल में रहती है, जो अपूर्व कांति वाली है, जो असह्य तेज वाली है, जो पूर्ण रूप से लाल है, जिसने रक्तरूप वस्त्र पहने हैं, जो भगवान विष्णु को अतिप्रिय है, जो लक्ष्मी मन को आनंद देती है, जो समुद्र मंथन से प्रकट हुई, जो विष्णु भगवान की पत्नी है, जो कमल से जन्मी है और जो अतिशय शून्य है, वैसी हे लक्ष्मी माता! अप मेरी रक्षा करें.

माँ लक्ष्मी देवी से इस प्रकार प्रार्थना करते हुए माँ लक्ष्मी-पूजन सही मुहूर्त पर करें. लक्ष्मीजी प्रसन्न होकर आपके घर में निवास करेंगी.

<u>लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र</u> : **ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यैन च विद्महे, विष्णु-पत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।**

ॐ सत्‌नाम साक्षी
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 अक्टूबर 2019
वर्ष 12 अंक 6

मंगल आशीष

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्रोत

सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 80	₹ 800
दो वर्ष के लिये	₹ 160	₹ 1600

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 18 (मध्यप्रदेश)
फोन 0751-4045144
सम्पर्क समय प्रात 8 से 10 व सायं 4 से 7 बजे तक
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन पर सूचना दे सकते हैं

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्‌गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरू धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब्बु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

कवित्त

माटी का दीपक

मैंने पूछा माटी के दीपक से क्या कर पाओगे
इतने छोटे-से हो जग का अंधकार हर पाओगे?
दीपक हँस बोला हूँ छोटा-सा लेकिन हैं हौसले बुलन्द
दृढ़ ऊँची प्राचीर वीर चढ़ ही जाता है फेंक कमन्द।
छोटा-सा इक खिला पुष्प बगिया को महका देता है
चहके डाली छोटा पंछी पूरा बन चहका देता है।
मन में है आत्म विश्वास समाई है मुझमें ऊर्जा अपार
फिर मैं अकेला नहीं साथ में हैं मेरे ये दीप हज़ार।
संगठन में है अतीव शक्ति एक एक कर जब मिल जाते हैं
धरती क्या अम्बर में छिटके तारे तोड़ कर लाते हैं।
पर विपरीत परिस्थितियों में कैसे अस्तित्व बचाओगे
तेज़ हवा के झोंको को तुम सब कैसे सह पाओगे?
बुझे दियों का आलिंगन कर पुनः प्रज्ज्वलित कर देंगे
अपनी ज्योति से तनिक-सा छू कर फिर ज्योतिर्मय कर देंगे।
माटी के दिये की सोच आत्म विश्वास पर मैंने मनन किया
हँसती लहराती ज्योति शक्ति को श्रद्धापूर्वक नमन किया।
उसके हल्के स्पर्श से ही अनगिनत दीप मुस्कुरा उठे
सज गए द्वार मुँडेर वातायन नगर वीथि जगमगा उठे।
अंधकार का नाश हुआ काली छायाएँ सिमट गईं
दीपक इतराए इठलाए स्वर्णिम आभाएँ छिटक गईं।

-सुधा जौहरी, जयपुर

अनुक्रम विषय	पृष्ठ

1. पूर्ण विश्वास सदा फलदायी (सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतवाणी) (आवरण मुखपृष्ठ) 1
2. व्रत-पर्व-उत्सव + दीपावली पूजन मुहूर्त 2
3. कार्तिक मास भजन आनन्द 4
4. दिव्य दीपोत्सव दीपावली (भजन) + हरिद्वार में गुरुजनों के घाटों का निर्माण (समाचार) 5
5. कार्तिक मास की महिमा 6
6. चैन्नई + रामेश्वरम् धाम मेले की सूचना 13
7. गुरु वचनों का करें आदर (आलेख) 14
8. रामकथा की महिमा 15
9. वियोग, विश्वास, घर की शोभा, संतों का मरण, पाप (श्रीमद् भागवत चिन्तन) 16
10. दीप पुँज का पावन पर्व- दीपावली 17
11. पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली का देशाटन (यात्रा-दर्शन) 18
12. प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा वार्षिकोत्सव एवं दिल्ली में स्वामी जयप्रकाश वर्सी उत्सव सूचना 22
13. श्री अमरापुर दरबार में कार्तिकोत्सव (सूचना), मन्दसौर आश्रम वार्षिकोत्सव सूचना 23
14. शोक-समाचार 24
15. जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या रंग भर दिया है (कवित्त) 25
16. वर्ग पहेली-185, 184 के सही हल, सही उत्तर भेजने वालों के नाम 25
17. पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली का यात्रा-कार्यक्रम 26
18. जिज्ञासा (सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतवाणी) 27
19. ब्रह्म दर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी) 28

कार्तिक मास भजन आनन्द

महिनो कतीअ जो आयो आयो

थलु : महिनो कतीअ जो आयो आयो,
जागुण जो कयो सायो, मैं वारी जावां...

1. दरिबारियुनि जा खुल्या दुआरा,
हिक बिए खे सड करनि प्यारा,
जागो देरि न लायो, मैं वारी जावां...

2. घिंड घड़ियाला, तुरियूं तूतारा,
जागाइण लाइ वजनि नग़ारा,
जागी रामु रीझायो, मैं वारी जावां...

3. पाण भी जागो बियनि जगायो,
कथा बुधण में सुरिति लगायो,
निंड जो भूतु भजायो, मैं वारी जावां...

4. व्रत कतीअ जा रखो रखायो,
दया, धर्म, पुञु कयो करायो,
दर्शनु गुर जो पायो, मैं वारी जावां...

5. कहे टेऊँ कम कूड़ा छड़ियो,
गुर गोबिन्द सां मन खे गडियो,
सफलो जनमु बणायो, मैं वारी जावां...

ज्योति ज्ञान जी बारि, गुरमुख

।। राग जोगु भजनु ।।

ज्योति ज्ञान जी बारि, गुरमुख,
हरिदमु पंहिंजे मन मंदिर में ।। टेक ।।

डीओ प्रेम सचे जो करि तूं, तंहिंमें तेलु तलब जो भरि तूं।
वटि विवेक जी धारि ।।1 ।।

गुर शिक्षा जी तीली लाए, अनभै जी तूं ज्योति जगाए।
भ्रम अंधेरो टारि ।।2 ।।

वस्तु अमोलक हासुलु थींदइ, चोर विकार न वेझो ईंदइ।
निरभै थी त गुज़ारि ।।3 ।।

टेऊँ लगी तूं गुर जे लारे, ज्योति ज्ञान जी वठु तूं बारे।
पाइजि पदु निर्धारु ।। 4 ।।

आयो आयो कारकतु महिनो सुहायो

तर्ज़ : सारी सारी रात तेरी याद ....

थलु : आयो आयो कारकतु महिनो सुहायो।
अमृत वेले जागी हरि खे ध्यायो, जनमु कयो सजायो ।।

1. हिन महिने जी महिमा भारी,
कृष्ण सत्भामा खे उच्चारी।
करे स्नानु धनु दान में हलायो।।

2. गुणवंतीअ हीउ व्रत रखियो आ,
प्रभुअ तंहिंखे पाण परखियो आ।
करे पट राणी कल्प बिरछु लगायो।।

3. हिन महिने में गुरु नानकु जाओ,
कालूअ तृप्ता जो अङणु वसायो।
डियनि वाधायूं सुभ पाठु रखायो।।

4. दास भजन अहिड़ो महिनो मल्हायो,
पाण जागी ऐं बियनि खे जागायो।
करे सत्संग शुभु कर्मु कमायो।।

–पूज्य स्वामी भजनदास जी महाराज

आई डियारी भागनि वारी

धुन : दो लफ्ज़ों की है दिल की (द ग्रेट गेम्बलर)

आई डियारी भागनि वारी–
जगमग जगमग कयो चौधारी ।।

1. प्रेम प्यार जी ज्योति जगायो–
रोशनु पंहिंजो अंदरु बणायो।
दूर थिये जींयं ऊंदहि कारी– जगमग ..... ।।

2. खुशि थी खाऊं माल मिठायूं–
पर कुछु ब्यानि खे भी खारायूं।
हुजनि बुखायल जे नर नारी– जगमग ..... ।।

3. आतिशबाजी भली हलायो–
पर न बियनि जो जिगिरु जलायो।
दुखी जीवनि खे डियो दिलिदारी– जगमग ..... ।।

4. करे सफाई सींगारियो–
कढी बियाई अंदरु बुहारियो।
वैर विरोध जी लाहियो बीमारी– जगमग ..... ।।

5. गीत खुशीअ जा गडिजी गायो–
अयुध्या में आहे रामु अजु आयो।
मिली 'मनोहर' मनायो डियारी– जगमग ..... ।।

–स्वामी मनोहर प्रकाश, श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

दिव्य दीपोत्सव दीपावली

मनाई जा रही है दुनियां के, हर शहर व गली–गली
दिव्य दीपोत्सव दीपावली!

आये अवध में जब रघुराई, उस उपलक्ष में हुई रोशनाई
परम्परा ये तब से चली– दीपोत्सव दीपावली!

असत्य पर हुई सत्य की जीत, वस्तुतः चली आई यह रीत
दुष्टों के दल में मची खलबली– दीपोत्सव दीपावली!

दीपावली त्योहार है प्यारा, जगमग हो उठा जग सारा
खिल उठी हर दिल की कली– दीपोत्सव दीपावली!

पँचदिवसीय होता आयोजन, धनतेरस से लक्ष्मी पूजन
घर घर जले दीप–अवली– दीपोत्सव दीपावली!

घर की करते साफ–सफाई, शुभ–लाभ गृह लक्ष्मी आई
फोड़ें फटाके गली–गली– दीपोत्सव दीपावली!

आबाल–वृद्ध सब माई–भाई, सबके मन में खुशी समाई
खायें मिठाई में गुलाब कली– दीपोत्सव दीपावली!

भारत का ये उत्सव महान, करते सब इसका गुणगान
मेरी भी है अँजलि– दीपोत्सव दीपावली!

दीपावली शुभ हो सुखदाई, 'दिलीप' की हार्दिक बधाई
सत्गुरु टेऊँराम करें सबकी भली– दीपोत्सव दीपावली!

दीपावली पर दो वरदान

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम, दीपावली पर दो वरदान।

परस्पर प्रेम रहे भाईचारा, मिटे अज्ञानता का अंधारा
दे दो शान्ति सुमति व ज्ञान– दीपावली पर दो वरदान।
चलें सदा हम पावन पथ, जीवन में हो बोध यथार्थ
करते रहें तेरा गुणगान– दीपावली पर दो वरदान।
विनम्रता का पाठ पढ़ें हम, सतत साधना में बढ़ें हम
तेरे चरणों में रहे नित ध्यान– दीपावली पर दो वरदान।
कर जोड़े अरदास हमारी, सुखी रहे ये सृष्टि सारी
'दिलीप' माँगे यही दान– दीपावली पर दो वरदान।

कार्तिकोत्सव

कार्तिक महीना आया पावन।
प्रातःकाल लाया जागरन।।
ब्रह्ममुहूरत में जागें सारे, करें स्नान नदी किनारे
खूब करें पुण्यों का अर्जन– कार्तिक महीना.....
इस महीने की बड़ी बड़ाई, नाम, दान करे चित्तलाई
पापों का होवे परिमार्जन– कार्तिक महीना.....
कथा–कीर्तन सुने दौ काना, फिर न जन्म–मरण में आना
होवें सांई के स्नेह भाजन– कार्तिक महीना.....
कार्तिक की क्या महिमा गाये, जग कर गुरु के चरन ध्याये
फिर न होगा आवन–जावन– कार्तिक महीना.....

।। दोहा ।।

दीपावली की दिव्यता, छाई छटा सब ओर।
दीपों से जगमग हो उठा, भारत का अंतिम छोर।।

संत दिलीपलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, धुलिया

हरिद्वार में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा नवीन घाटों का निर्माण

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा 'सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द घाट' का नवीनीकरण करवाया जा रहा है इसके अलावा इसी घाट के सामने वाले भाग में गुरुजनों की स्मृति में द्वार एवं घाट बनवाये जा रहे हैं. नेशनल हॉयवे क्रमांक–72 पर एवं ललतौरा पुल के पास भी घाटों के निर्माण की योजना है. आशा की जानी चाहिए आने वाले वर्ष 2020 में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के नवीनतम घाटों पर दर्शन–स्नान का सुअवसर गंगा जाने वाले तीर्थयात्रियों व प्रेमप्रकाशी प्रेमियों को मिलेगा.

कार्तिक मास की महिमा

सृष्टि के मूल सूर्य की राश्यान्तर स्थितियों के आधार पर दक्षिणायन और उत्तरायण का विधान है. भगवान् नारायण के शयन और प्रबोधन से चातुर्मास्य का प्रारम्भ और समापन होता है. उत्तरायण को देवकाल और दक्षिणायन को आसुरीकाल माना गया है. दक्षिणायन में देवकाल न होने से सतगुणों के क्षरण से बचने और बचाने के लिये उपासना तथा व्रत-विधान हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं. कर्क राशि पर सूर्य के आगमन के साथ ही दक्षिणायन काल का प्रारम्भ हो जाता है. और कार्तिक मास इसी दक्षिणायन और चातुर्मास्य की अवधि में ही उपस्थित होता है. पुराणादि शास्त्रों में कार्तिकमास का विशेष महत्व निर्दिष्ट है. हर मास का यूँ तो अलग-अलग महत्त्व है, मगर व्रत एवं तप की दृष्टि से कार्तिक की अतुल्य महिमा बतायी गयी है-

मासानां कार्तिकः श्रेष्ठो देवानां मधुसूदनः।
तीर्थं नारायणाख्यं हि त्रितयं दुर्लभं कलौ।।

भाव यह है कि भगवान् विष्णु एवं विष्णुतीर्थ के सदृश ही कार्तिक मास को श्रेष्ठ और दुर्लभ कहा गया है. कार्तिक मास कल्याणकारी मास माना गया है.

एक दूसरे वचन में कहा गया है कि कार्तिक के समान दूसरा कोई मास नहीं, सत्ययुग के समान कोई युग नहीं, वेद के समान कोई शास्त्र नहीं और गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है-

न कार्तिकसमो मासो न कृतेन समं युगम्।
न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थं गंगया समम्।।

सामान्य रूप से तुला राशि पर सूर्यनारायण के आते ही कार्तिकमास प्रारम्भ हो जाता है.

कार्तिक का माहात्मय पद्म पुराण तथा स्कन्द पुराण में बहुत विस्तार से उपलब्ध है. कार्तिक मास में स्त्रियाँ ब्रह्ममुहूर्त में स्नान कर राधा-दामोदर की पूजा करती हैं.

कलियुग में कार्तिक मास-व्रत को मोक्ष के साधन के रूप में दर्शाया गया है. पुराणों के मतानुसार इस मास को चारों पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाला माना गया है. स्वयं नारायण ने ब्रह्मा को, ब्रह्मा ने नारद को और नारद ने महाराज पृथु को कार्तिक मास के सर्वगुण सम्पन्न माहात्मय के संदर्भ में बताया है.

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य सुख, शान्ति और परम आनन्द चाहता है. कोई भी यह नहीं चाहता कि उसे अथवा उसके परिवारजनों को किसी तरह का कोई कष्ट, दुःख एवं अशान्ति का सामना करना पड़े. परन्तु प्रश्न यह है कि दुःखों से मुक्ति कैसे मिले? हमारे शास्त्रों में संत्रास से मुक्ति दिलाने हेतु कई उपाय निर्दिष्ट हैं, उनमें कार्तिक मास के स्नान व्रत की अत्यंत महिमा बतायी गयी है और बताया गया है इस मास का स्नान-व्रत लेने वालों को कई संयम, नियमों का पालन करना चाहिये तथा श्रद्धा-भक्तिपूर्वक भगवान् की आराधना करनी चाहिये. कार्तिक में पूरे माह ब्रह्ममुहूर्त में किसी नदी, तालाब, नहर या पोखर में स्नान कर भगवान् की पूजा की जाती है.

इस मास में व्रत करने वाली स्त्रियाँ अक्षयनवमी को आँवला-वृक्ष के नीचे भगवान् कार्तिकेय की कथा सुनती हैं. तदुपरान्त जहाँ ब्राह्मण को अन्न-धन दान में दिये जाते हैं, वहीं गुप्तदान भी किया जाता है. इसके साथ ही कुँआरों -कुँआरियों एवं ब्राह्मणों को आँवला वृक्ष के नीचे विधिवत् भोजन कराया जाता है. वैसे तो पूरे कार्तिक मास में दान करने का विधान है. कहीं-कहीं तो अक्षय नवमी के दिन मेला भी लगता है.

कार्तिक मास कई अर्थों में अन्य मासों से अधिक महत्त्व रखता है. इस मास की अमावस्या को देशभर में प्रकाश पर्व को सभी धूमधाम से मनाते हैं. कहा जाता है कि प्रकाश पर्व अथवा दीपावली के दिन विष्णुप्रिया माता लक्ष्मी सर्वत्र भ्रमण करती हैं और अपने भक्तों को हर तरह से धन-धान्य से परिपूर्ण करती हैं.

स्कन्द पुराण के वैष्णव खण्ड में कार्तिक व्रत के महत्त्व के विषय में कहा गया है-

रोगापहं पातकनाशकृत्परं
सद्बुद्धिदं पुत्रधनादिसाधकम्।
मुक्तेर्निदानं नहि कार्तिकव्रताद्
विष्णुप्रियादन्यदिहास्ति भूतले।।

इस मास को जहाँ रोगापह अर्थात् रोग विनाशक कहा गया है, वहीं सद्बुद्धि प्रदान करने वाला, लक्ष्मी का साधक तथा मुक्ति प्राप्त कराने में सहायक बताया गया है.

कार्तिक मास भर दीप दान करने की विधि है. आकाश दीप भी जलाया जाता है. यह कार्तिक का प्रधान कृत्य है. कार्तिक का दूसरा प्रमुख कृत्य तुलसीवन-पालन है. वैसे तो कार्तिक में ही नहीं, हर मास में तुलसी का पालन-सेवन कल्याणमय कहा गया है, किंतु कार्तिक में तुलसी आराधना की विशेष महिमा है. एक ओर आयुर्वेद शास्त्र में तुलसी को रोगहर कहा गया है, वहीं दूसरी ओर यह यमदूतों के भय से मुक्ति प्रदान करती है. तुलसी-वन पर्यावरण की शुद्धि के लिये भी महत्वपूर्ण है. भक्तिपूर्वक तुलसीपत्र अथवा मँजरी से भगवान् का पूजन करने से अनन्त लाभ मिलता है, कार्तिक व्रत में तुलसी-आरोपण का विशेष महत्त्व बताया गया है. भगवती तुलसी विष्णुप्रिया कहलाती हैं.

इसी तरह कार्तिक मास व्रत का तीसरा प्रमुख कृत्य है- भूमि पर शयन. भूमि शयन करने से सात्त्विकता में वृद्धि होती है. भूमि अर्थात् प्रभु के चरणों में सोने से जीव भयमुक्त हो जाता है. कार्तिक का चौथा मुख्य कार्य ब्रह्मचर्य का पालन बताया गया है. पाँचवाँ द्विदल वर्जन को माना गया है. उड़द, मूँग, मसूर, चना, मटर, राई वगैरह की गणना द्विदल में की जाती है.

द्विदलं तिलतैलं च पक्वान्नं मूल्यदूषितम्।
अवदुष्टं शब्ददुष्टं वर्जयेत् कार्तिकव्रती।।

कार्तिकव्रती को चना, मटर, आदि दालों, तिल का तेल, पकवान, भाव तथा शब्द से दूषित पदार्थों का त्याग करना चाहिये.

विष्णु संकीर्तन कार्तिक मास का मुख्य कृत्य है. संकीर्तन से वाणी को शुद्धता मिलती है. कलियुग में तो इसका और भी अधिक महत्त्व है- **कलौ हरिकीर्तनात्.** कथा श्रवण से पापों का नाश होता है, बुद्धि सदाचारी बनती है. कार्तिकव्रती को चाहिये कि वह गीता, श्रीमद्भागवत और श्री रामचरित मानस आदि का श्रवण करे. इसके अलावा कार्तिक व्रती के लिये गोदान, अन्नदान, विष्णु पूजन, सत्य, अहिंसा आदि धर्मों का पालन आवश्यक है.

यदि कार्तिक मास के महत्त्व को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह पायेंगे कि अश्वत्थ पूजा, तुलसीवन-पालन एवं पूजन, आँवला-वृक्ष का पूजन, गोपूजा, गंगा स्नान तथा पूजन, गोवर्धन पूजा आदि से पर्यावरण शुद्ध होता है और मनुष्य प्रकृति प्रिय बनता है. इस व्रत से इहलोक और परलोक दोनों में यश, बुद्धि, बल, धन तथा सत्संग की प्राप्ति होती है. जो व्यक्ति इस मास को श्रद्धा, भक्ति एवं विश्वास से उत्सव की भाँति मनाता है, वह सब तरह से परिपूर्ण हो जाता है.

परम पावन कार्तिक मास का व्रत-विधान- मानव जीवन में कार्तिक मास शुचिता, स्नान और व्रत की दृष्टि से मोक्ष का सर्वोत्तम साधन माना गया है. स्कन्दपुराण में कार्तिक मास का महत्त्व भगवान् विष्णु के सदृश दुर्लभ और श्रेष्ठ बताया गया है. काशी जो सप्तपुरियों में से एक है, परम मोक्षदायिनी है और जहाँ हरि तथा हर का स्वरूप श्री काशी विश्वनाथ जी स्वयं हैं, जहाँ गंगाजी प्रवाहित होती हैं, ऐसी मोक्षदायिनी नगरी काशी में तथा अन्य पावन तीर्थों में अथवा घर में रहकर कार्तिक मास का स्नान, व्रत एवं तप किस प्रकार किया जाना चाहिये, इसका वर्णन शास्त्रों मे इस प्रकार दिया गया है-

कार्तिकव्रती को सर्वप्रथम गंगा, विष्णु, शिव तथा सूर्य का स्मरण कर जल में प्रवेश करना चाहिये. तदनन्तर नाभिपर्यन्त जल में खड़े होकर विधिपूर्वक स्नान करना

चाहिये. गृहस्थ व्यक्ति को काला तिल तथा आँवले का चूर्ण लगाकर स्नान करना चाहिये, परन्तु विधवा तथा संन्यासियों को तुलसी के पौधे की जड़में लगी हुई मृत्तिका को लगाकर स्नान करना चाहिये. सप्तमी, अमावस्या, नवमी, द्वितीया, दशमी तथा त्रयोदशी- इन तिथियों में तिल एवं आँवले का प्रयोग वर्जित है.

तिलामलकचूर्णेन गृहो स्नानं समाचरेत्।
विधवास्त्रीयतीनां तु तुलसीमूलमृत्सया।।
सप्तमी दर्शनवमी द्वितीया दशमीषु च।
त्रयोदश्यां न च स्नायाद्धात्रीफलतिलैः सह।।

कार्तिक मास में पितरों का तर्पण करने से पितरों को अक्षय तृप्ति की प्राप्ति होती है. तर्पण के पश्चात् व्रती को जल से बाहर आकर शुद्ध वस्त्र धारणकर भगवान् विष्णु का पूजन करना चाहिये.

किसी प्रकार के तामसी एवं उत्तेजक पदार्थों का सेवन व्रती को नहीं करना चाहिये. पराये अन्न का भक्षण, किसी से द्रोह करना तथा परदेशगमन भी व्रती को करना उचित नहीं है.

कार्तिकव्रती को ब्रह्मचर्य का पालन, भूमिशयन, दिन के चतुर्थ प्रहर में पत्तल आदि पर भोजन करने का विधान है. कार्तिक मास में स्नान एवं व्रत करने वाले को केवल नरक चतुर्दशी (कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी) को ही तेल लगाना चाहिये. शेष दिनों में तेल लगाना वर्जित है. इसके अतिरिक्त कार्तिकव्रती को लौकी, गाजर, कैथ, बैगन आदि तथा बासी अन्न, पराया अन्न, दूषित अन्न का भी भक्षण नहीं करना चाहिये. व्रती को चाहिये कि वह मुनि वृत्ति से रहे.

कार्तिक व्रत करने वाले मानव को देखकर यमदूत इस प्रकार पलायन कर जाते हैं, जिस प्रकार सिंह से पीड़ित हाथी भाग खड़े होते हैं. इस भूतल पर भुक्ति और मुक्ति प्रदायक जितने भी तीर्थस्थान हैं, वे सभी कार्तिकव्रती के देह में निवास करते हैं.

विष्णुव्रत करने वाला प्राणी जिस किसी भी स्थान में पूजित होकर रहता है, वहाँ पर ग्रह-भूत-पिशाच आदि नहीं रहते-

विष्णुव्रतकरो नित्यं यत्र तिष्ठति पूजितः।
ग्रहभूतपिशाचाद्या नैव तिष्ठन्ति तत्र वै।।

उपयुक्त विधि के अनुसार कार्तिकव्रती प्राणी के पुण्य को चतुर्मुख ब्रह्मा भी कहने में समर्थ नहीं है.जो भी मानव विष्णु प्रियकारी, समस्त पातकों के नाशक, सत्पुत्र तथा धन-धान्य वृद्धिकारक कार्तिक व्रत का नियमपूर्वक पालन करता है, उसे तीर्थयात्रा के महान् फल की प्राप्ति होती है.

करवा चौथ व्रत की कथा

भारतीय हिन्दू स्त्रियों के लिये करवा चौथ का व्रत अखण्ड सुहागको देनेवाला माना जाता है. विवाहित स्त्रियाँ इस दिन अपने पति की दीर्घ आयु एवं स्वास्थ्य की मँगल कामना करके भगवान् रजनीश (चन्द्रमा) को अर्घ्य अर्पित कर इस व्रत को पूर्ण करती हैं. स्त्रियों में इस दिन के प्रति इतना अधिक श्रद्धाभाव होता है कि वे कई दिन पूर्व से ही इस व्रत की तैयारी प्रारम्भ कर देती हैं. यह व्रत कार्तिक कृष्ण की चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी को किया जाता है, यदि वह दो दिन चन्द्रोदय व्यापिनी हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वविद्धा लेनी चाहिये. करक चतुर्थी को ही करवा चौथ कहा जाता है.

कथा: इन्द्रप्रस्थ नगरी में वेदशर्मा नामक एक विद्वान् ब्राह्मण के सात पुत्र तथा एक पुत्री थी जिसका नाम वीरावती था. उसका विवाह सुदर्शन नामक एक ब्राह्मण के साथ हुआ. वेदशर्मा ब्राह्मण के सभी पुत्र विवाहित थे. एक बार करवा चौथ के व्रत के समय वीरावती की भाभियों ने तो पूर्ण विधि से व्रत किया, किन्तु वीरावती सारा दिन निर्जल रहकर भूख न सह सकी तथा निढाल होकर बैठ गयी. भाइयों की चिन्ता पर भाभियों ने बताया कि वीरावती भूख से पीड़ित है. करवाचौथ का व्रत चन्द्रमा देखकर ही खोलेगी. यह सुनकर भाइयों ने बाहर खेतों में जाकर आग जलायी तथा ऊपर कपड़ा तान कर चन्द्रमा- जैसा दृश्य बना दिया, फिर जाकर बहन से कहा कि चाँद निकल आया है, अर्घ्य दे दो. यह सुनकर वीरावती ने अर्घ्य देकर खाना खा लिया. नकली चन्द्रमा को अर्घ्य देने से उसका व्रत खण्डित हो गया तथा उसका पति अचानक बीमार पड़

गया. वह ठीक न हो सका. एक बार इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी करवा चौथ का व्रत करने पृथ्वी पर आयीं. इसका पता लगने पर वीरावती ने जाकर इन्द्राणी से प्रार्थना की कि उसके पति के ठीक होने का उपाय बतायें. इन्द्राणी ने कहा कि तेरे पति की यह दशा तेरी ओर से रखे गये करवा चौथ व्रत के खण्डित हो जाने के कारण हुई है. यदि तू करवा चौथ का व्रत पूर्ण विधि-विधान से बिना खण्डित किये करेगी तो तेरा पति ठीक हो जायगा. वीरावती ने करवा चौथ का व्रत पूर्ण विधि से सम्पन्न किया, फलस्वरूप उसका पति बिलकुल ठीक हो गया. करवा चौथ का व्रत उसी समय से प्रचलित है.

गोवत्स द्वादशी

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की द्वादशी गोवत्स द्वादशी के नाम से जानी जाती है. इस व्रत में भक्तिपूर्वक गोमाता का पूजन किया जाता है.

कथाः सतयुग की बात है, महर्षि भृगु के आश्रम मण्डल में भगवान् शंकर के दर्शन की अभिलाषा से करोड़ों मुनिगण तपस्या कर रहे थे. एक दिन उन तपस्यारत मुनियों को दर्शन देने के लिये भगवान् शंकर एक बूढ़े ब्राह्मण का वेश बनाकर हाथ में डंडा लिये काँपते हुए उस आश्रम में आये. उनके साथ सुंदर सौम्य गौ के रूप में जगन्माता पार्वती जी भी थीं. वृद्ध ब्राह्मण बने भगवान् शंकर महर्षि भृगु के पास जाकर बोले- हे मुने! मैं यहाँ स्नान कर जम्बूक्षेत्र में जाऊँगा और दो दिन बाद लौटूँगा, तब तक आप इस गाय की रक्षा करें.

मुनियों के उस गौ की सभी प्रकार से रक्षा करने की प्रतिज्ञा करने पर भगवान् शंकर अन्तर्हित हो गये और फिर थोड़ी देर बाद एक व्याघ्र के रूप में प्रकट होकर बछड़े सहित गौ को डराने लगे. ऋषिगण भी व्याघ्र के भय से आक्रान्त हो आर्तनाद करते हुए यथासम्भव उसे हटाने का प्रयास कर रहे थे. उधर गाय भी रँभा रही थी. निदान उन शान्तचित्त मुनियों ने क्रुद्ध हो ब्रह्मा से प्राप्त और भयंकर शब्द करने वाले घंटे को बजाना प्रारम्भ किया. उस शब्द से व्याघ्र तो भाग गया और उसके स्थान पर भगवान् शंकर प्रकट हो गये, भगवती उमा जगज्जननी पार्वती भी गोरूप त्यागकर वत्सरूपी कार्तिकेय तथा अन्य गणों के साथ भगवान् भोलेनाथ के वामभाग में विराजित हो गयीं. ब्रह्मवादी ऋषियों ने उनका पूजन किया. उस दिन कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की द्वादशी थी, इसीलिये यह व्रत गोवत्स द्वादशी के रूप में प्रारम्भ हुआ.

एक अन्य कथा के अनुसार राजा उत्तानपाद ने पृथ्वी पर इस व्रत को प्रचारित किया. उनकी रानी सुनीति इस व्रत को किया करती थी, जिसके प्रभाव से उन्हें ध्रुव जैसा पुत्र हुआ. आज भी माताएँ पुत्ररक्षा और संतान-सुख के लिये इस व्रत को करती हैं.

धनतेरस की कथा

कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी धनतेरस कहलाती है. इस दिन चाँदी का बर्तन खरीदना अत्यंत शुभ माना गया है, परंतु वस्तुतः यह यमराज से सम्बन्ध रखने वाला व्रत है. इस दिन सायंकाल घर के बाहर मुख्य दरवाजे पर एक पात्र में अन्न रखकर उसके ऊपर यमराज के निमित्त दक्षिणाभिमुख दीपदान करना चाहिये तथा उसका गन्धादि से पूजन करना चाहिये.

कथाः एक बार यमराज ने अपने दूतों से कहा कि तुम लोग मेरी आज्ञा से मृत्युलोक के प्राणियों के प्राण हरण करते हो, क्या तुम्हें ऐसा करते समय कभी दुःख भी हुआ है या कभी दया भी आयी है? इस पर यमदूतों ने कहा- महाराज! हम लोगों का कर्म अत्यंत क्रूर है परंतु किसी युवा प्राणी की असामयिक मृत्यु पर उसका प्राण हरण करते समय वहाँ का करुण क्रन्दन सुनकर हम लोगों का पाषाण हृदय भी विचलित हो जाता है. एक बार हम लोगों को एक राजकुमार के प्राण उसके विवाह के चौथे दिन ही हरण करने पड़े. उस समय वहाँ का करुण क्रन्दन, चीत्कार और हाहाकार देख-सुनकर हमें अपने कृत्य से अत्यन्त घृणा हो गयी. उस मँगलमय उत्सव के बीच हम लोगों का यह कृत्य अत्यन्त घृणित था, इससे हम लोगों का हृदय अत्यंत दुःखी हो गया. अतः हे स्वामिन्! कृपा करके कोई ऐसी युक्ति

बताइये जिससे ऐसी असामयिक मृत्यु न हो. इस पर यमराज ने कहा कि जो धनतेरस के पर्व पर मेरे उद्देश्य से दीपदान करेगा, उसकी असामयिक मृत्यु नहीं होगी.

पौराणिक सद्ग्रंथों के अनुसार आयुर्वेद के जनक धन्वन्तरि वैद्य आज ही के दिन समुद्र मंथन से अमृत घट लेकर प्रकट हुए थे. इसलिए इस दिन को धन्वन्तरि जयंती भी कहा जाता है.

नरक चतुर्दशी की कथा

कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी नरक चतुर्दशी कहलाती है. सनत्कुमार संहिता के अनुसार इसे पूर्वविद्धा लेना चाहिये. इस दिन अरुणोदय से पूर्व प्रत्यूष काल में स्नान करने से मनुष्य को यमलोक का दर्शन नहीं करना पड़ता. यद्यपि कार्तिक मास में तेल नहीं लगाना चाहिये, फिर भी इस तिथि विशेष को शरीर में तेल लगाकर स्नान करना चाहिये. जो व्यक्ति इस दिन सूर्योदय के बाद स्नान करता है, उसके शुभ कार्यों का नाश हो जाता है. स्नान से पूर्व शरीर पर अपामार्ग का भी प्रोक्षण करना चाहिये.

कथा: वामनावतार में भगवान् श्रीहरि ने सम्पूर्ण पृथ्वी नाप ली. बलि के दान और भक्ति से प्रसन्न होकर वामन भगवान् ने उनसे वर माँगने को कहा. उस समय बलि ने प्रार्थना की कि कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी सहित इन तीन दिनों में मेरे राज्य का जो भी व्यक्ति यमराज के उद्देश्य से दीपदान करे, उसे यम यातना न हो और इन तीन दिनोंमें दीपावली मनाने वाले का घर लक्ष्मीजी कभी न छोड़ें. भगवान् ने कहा- एवमस्तु. जो मनुष्य इन तीन दिनों में दीपोत्सव करेगा, उसे छोड़कर मेरी प्रिया लक्ष्मी कहीं नहीं जायँगी.

दीपावली

भारतवर्ष में मनाये जाने वाले सभी त्योहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से अप्रतिम महत्त्व है. सामाजिक दृष्टि से इस पर्व का महत्त्व इसलिये है कि दीपावली आने से पूर्व ही लोग अपने घर द्वार की स्वच्छता पर ध्यान देते हैं, घर का कूड़ा-करकट साफ करते हैं, टूट-फूट सुधरवा कर घर की दीवारों पर सफेदी, दरवाजों पर रंग-रोगन करवाते हैं, जिससे उस स्थान की न केवल आयु ही बढ़ जाती है, बल्कि आकर्षण भी बढ़ जाता है. वर्षा-ऋतु में आयी अस्वच्छता का भी परिमार्जन हो जाता है.

दीपावली के दिन धन-सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी की पूजा करने का विधान है. शास्त्रों का कथन है कि जो व्यक्ति दीपावली को दिन-रात जागरण करके लक्ष्मी की पूजा करता है, उसके घर लक्ष्मी जी का निवास होता है. जो आलस्य और निद्रा में पड़कर दीपावली यूँ ही गँवाता है, उसके घर से लक्ष्मी रूठकर चली जाती है.

ब्रह्मपुराण में लिखा है कि कार्तिक की अमावस्या को अर्धरात्रि के समय लक्ष्मी महारानी सद्गृहस्थों के घर में जहाँ-तहाँ विचरण करती हैं. इसलिये अपने घर को सब प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित करके दीपावली तथा दीपमालिका मनाने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होती हैं और वहाँ स्थायी रूप से निवास करती हैं. यह अमावस्या प्रदोषकाल से आधी रात तक रहने वाली श्रेष्ठ होती है. यदि आधी रात तक न भी रहे तो प्रदोषव्यापिनी दीपावली माननी चाहिये.

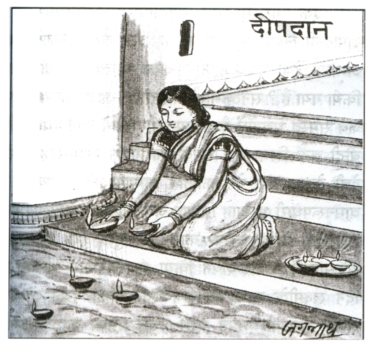

प्रायः प्रत्येक घर में लोग अपने रीति-रिवाज के अनुसार गणेश-लक्ष्मी पूजन तथा द्रव्यलक्ष्मी-पूजन करते हैं. कुछ स्थानों में दीवार पर अथवा काष्ठ पट्टिका पर खड़िया मिट्टी तथा विभिन्न रंगों द्वारा चित्र बनाकर या पाटे पर गणेश लक्ष्मीजी की मूर्ति रखकर कुछ चाँदी के सिक्के रखकर इनका पूजन करते हैं तथा थाली में तेरह अथवा छब्बीस दीपकों के मध्य तेल से प्रज्वलित चौमुखा दीपक रखकर दीपमालिका का पूजन भी करते हैं और पूजा के अनन्तर उन दीपों को घर के मुख्य-मुख्य स्थानों पर रख

देते हैं. चौमुखा दीपक रात भर जले ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये.

अन्नकूट महोत्सव

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन की पूजा कर अन्नकूट-महोत्सव होता है. अनेक प्रकार के भक्ष्य-भोज्यादि पदार्थों को बनाकर भगवान् को भोग लगाया जाता है. मन्दिरों आदि में विशेष रूप से नैवेद्यान्नों का कूट (पर्वत) बनाया जाता है और पूजन के अनन्तर प्रसाद वितरण होता है. इन्द्र के द्वारा की गयी प्रबल वृष्टि से रक्षा के लिये भगवान् ने गोवर्धन पर्वत को उठाकर समस्त ब्रजवासियों की रक्षा की थी, तभी से गोवर्धन-पूजा का यह पर्व प्रचलित हुआ.

यमद्वितीया (भैयादूज)

कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यमराज ने अपनी बहन यमुना के घर जाकर भोजन किया था और उसे वर दिया था. इसी उपलक्ष में यह त्योहार होता है. इस दिन यमुनास्नान, यम पूजन और बहन के घर में भोजन करने की विधि है.

सूर्यषष्ठी

कार्तिक शुक्ल षष्ठी मुख्य रूप से सूर्याराधना का पर्व है. इसमें षष्ठी तिथि को फल-पुष्प, पकवान आदि नैवेद्य लेकर नदी तट पर सूर्य का पूजन कर सूर्य को सायंकालीन अर्घ्य प्रदान किया जाता है. गंगा को दीपदान होता है. दूसरे दिन सूर्योदय के समय सूर्यदेव को अर्घ्य देकर व्रत पूर्ण होता है.

अक्षयनवमी

कार्तिक शुक्ल नवमी अक्षय-नवमी है, इस दिन किया गया सारा पुण्यानुष्ठान अक्षय फलदायी होता है. इस दिन आँवले के वृक्ष के नीचे पूजन, ब्राह्मणभोजन आदि का विशेष माहात्मय है. साथ ही कूष्माण्डदान भी होता है.

गोपाष्टमी

कार्तिक शुक्ल की अष्टमी तिथि को गोपाष्टमी व्रत पर्व मनाया जाता है. इस वर्ष शुक्रवार ४ नवम्बर २०१९ को गोपाष्टमी महोत्सव मनाया जाएगा. इस दिन गौ माता की पूजा करने से अमोघ फल प्राप्त होता है. गौ माता की सेवा और रक्षा करने से सुख-सौभाग्य-समृद्धि में वृद्धि होती है. इस दिन प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर गोमाता व उनके बछड़े की श्रद्धा-भाव से पूजा करें. यदि संभव हो तो इस दिन गोमाता के पीछे कुछ दूर तक पैदल चलना चाहिए. गोमाता को भोजन (चारा + फलादि) कराकर उनके चरणों में प्रणाम करना चाहिए. संभव हो तो गोपालकों को भी उपहार आदि देना श्रेयस्कर रहता है.

कथा : पौराणिक कथानुसार भगवान श्रीकृष्ण जी ने बाल्य काल में माँ यशोदा से गायों की सेवा हेतु अपनी इच्छा व्यक्त की. हे माते! मुझे गायों को चराने की आज्ञा प्रदान करें. किंतु माता यशोदा ने अनुमति नहीं दी. भगवान बालगोपाल के हठ को देखते हुए नन्द बाबा एवं माता यशोदा ने शांडिल्य ऋषि से इसके लिए एक शुभ मुहूर्त्त निकलवाया. इसके लिए भगवान बालकृष्ण ने पहले ही शांडिल्य ऋषि को कौन-सा मुहूर्त्त बताना है- बता दिया था. कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को बंसीधर को गायें चराने की अनुमति मिली. इस दिन गायें चराने से पूर्व भगवान ने गोमाता की पूजा-अर्चना-प्रदक्षिणा की. तत्पश्चात् गो माता को प्रणाम कर चराने के लिए यमुना नदी के नट पर ग्वाल बालों के संग गये. यहाँ से नन्दलाला को गोपाल के नाम से भी बुलाया जाने लगा.

देवोत्थापनी एकादशी

यह कथा है कि भगवान् विष्णु आषाढ़ शुक्ल एकादशी को क्षीरसागर में शयन करते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जगते हैं. अतः उनके जागरण की यह तिथि देवोत्थापनी या हरिप्रबोधिनी एकादशी कहलाती है. इस दिन व्रत तथा रात्रि जागरण और विष्णुपूजन का विशेष महत्त्व है. इस दिन तुलसी-विवाह का उत्सव भी होता है.

भगवान विष्णु आषाढ़ शुक्ल एकादशी को ४ माह के लिए क्षीरसागर में शयन करते हैं. चार महीने पश्चात् वे कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागते हैं. शयनकाल में विवाह आदि माँगलिक कार्य निषेध रहते हैं. भगवान विष्णु के जागने के बाद ही सभी माँगलिक कार्य शुरू होते हैं.

कथा के अनुसार एक बार भगवान विष्णु से उनकी प्रिया लक्ष्मीजी ने आग्रह के भाव में कहा- हे भगवन्! अब आप दिन-रात जागते हैं, लेकिन जब सोते हैं तो फिर लाखों-करोड़ों वर्षों के लिए सो जाते हैं तथा उस समय समस्त चराचर का नाश भी कर डालते हैं. इसलिए आप नियम से विश्राम किया कीजिए. आपके ऐसा करने से मुझे भी कुछ समय आराम मिलेगा. लक्ष्मीजी की बात भगवान को उचित लगी. उन्होंने कहा कि, तुम ठीक कहती हो. मेरे जागने से सभी देवों और खासकर तुम्हें कष्ट होता है. तुम्हें मेरी सेवा से वक्त नहीं मिलता. इसलिए आज से मैं हर वर्ष चार मास वर्षा ऋतु में शयन किया करूँगा. मेरी यह निद्रा अल्पनिद्रा कहलाएगी. यह मेरी अल्पनिद्रा मेरे भक्तों के लिए परम मंगलकारी रहेगी. इस दौरान जो भी भक्त मेरे शयन की भावना कर मेरी सेवा करेंगे, मैं उनके घर तुम्हारे समेत निवास करूँगा.

तुलसी विवाह

कार्तिक शुक्ल एकादशी को शालिग्राम और तुलसी का विवाह कार्तिकव्रती स्त्रियाँ रचाती हैं. समस्त विधि-विधान पूर्वक गाजे-बाजे के साथ एक सुंदर मंडप के नीचे यह कार्य सम्पन्न होता है. विवाह के समय स्त्रियाँ मंगलगीत तथा भजन गाती हैं.

मगन भई तुलसी राम गुन गाइके,
मगन भई तुलसी।
सब कोऊ चली डोली पालकी रथ जुड़वाये के।।
साधु चले पांय पैया, चींटी सो बचाई के।
मगन भई तुलसी राम गुन गाइके।।

तुलसी को विष्णुप्रिया भी कहा जाता है. शास्त्रों में कहा गया है कि जिन दम्पतियों के संतान नहीं होती, वे जीवन में एक बार तुलसी का विवाह करके कन्यादान का पुण्य अवश्य प्राप्त करें.

पौराणिक कथानुसार एक लड़की जिसका नाम वृंदा था. राक्षस कुल में उसका जन्म हुआ था. वृंदा बचपन से ही भगवान विष्णु की परम भक्त थी. बड़े ही प्रेम से भगवान की पूजा किया करती थी. जब वह बड़ी हुई तो उनका विवाह राक्षस कुल में दानवराज जलंधर से हो गया. जलंधर समुद्र से उत्पन्न हुआ था. वृंदा बड़ी ही पतिव्रता स्त्री थी सदा अपने पति की सेवा किया करती थी. एक बार देवताओं और दानवों में युद्ध हुआ जब जलंधर युद्ध पर जाने लगे तो वृंदा ने कहा- 'स्वामी! आप युद्ध पर जा रहे हैं, आप जब तक युद्ध में रहेंगे मैं पूजा में बैठकर आपकी जीत के लिए अनुष्ठान करूँगी और जब तक आप वापस नहीं आ जाते मैं अपना संकल्प नहीं छोड़ूँगी. जलंधर तो युद्ध में चले गए और वृंदा व्रत का संकल्प लेकर पूजा में बैठ गई. उनके व्रत के प्रभाव से देवता जलंधर को ना जीत सके. सारे देवता जब हारने लगे तो भगवान विष्णु जी के पास गए.

देवताओं की अनुनय विनय पर अन्ततः भगवान विष्णु ने जलंधर का रूप रखा और वृंदा के महल में पहुँच गए. जैसे ही वृंदा ने अपने पति को देखा, वे तुरंत ही पूजा में से उठ गई और उनके चरण छू लिए. जैसे ही वृंदा का संकल्प टूटा- युद्ध में देवताओं ने जलंधर को मार दिया और उसका सिर काटकर अलग कर दिया. उनका सिर वृंदा के महल में जब गिरा और वृंदा ने देखा कि मेरे पति का सिर तो कटा पड़ा है तो फिर ये जो मेरे सामने खड़े हैं- ये कौन है?

तब उसने पूछा- 'आप कौन हैं जिसका स्पर्श मैंने किया?' इस पर भगवान अपने रूप में आ गए पर वे कुछ बोल ना सके. वृंदा सारी बात समझ गई. उसने भगवान को श्राप दिया- 'आप पत्थर के हो जाओ.' भगवान तुरंत पत्थर के हो गए. सभी देवता हाहाकार करने लगे. लक्ष्मीजी रोने लगीं और प्रार्थना करने लगीं तब वृंदा जी ने भगवान का शाप विमोचन किया और अपने पति का सिर लेकर वे सती हो गईं.

उनकी राख से एक पौधा निकला तब भगवान विष्णु जी ने कहा- आज से इसका नाम तुलसी है, और मेरा एक रूप इस पत्थर के रूप में रहेगा जिसे शालिग्राम के नाम से तुलसी जी के साथ पूजा जाएगा और मैं बिना तुलसी के भोग स्वीकार नहीं करूगा. तब से तुलसीजी की पूजा सभी करने लगे और तुलसीजी का विवाह शालिग्राम जी के साथ कार्तिक मास शुक्ल की देवउठनी एकादशी को किया जाता है.

वैकुण्ठ चतुर्दशी

इस दिन वैकुण्ठाधिपति भगवान् विष्णु की विशेष पूजा होती है.

भीष्म पंचक व्रत

कार्तिक शुक्ल एकादशीसे पूर्णिमा तक

यह व्रत कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की प्रबोधिनी एकादशी से प्रारम्भ होता है और पूर्णिमा को पूर्ण होता है. इसे भीष्मजी ने भगवान् वासुदेव से प्राप्त किया था, इसीलिये यह व्रत भीष्मपंचक के नामसे प्रसिद्ध है.

व्रत विधान : इसके निमित्त काम, क्रोधादि त्याग कर ब्रह्मचर्यपूर्वक पाँच दिन का व्रत किया जाता है. व्रती मनुष्य को चाहिये कि मौन भाव से स्नान कर देवताओं, ऋषियों और पितरोंका तर्पण करे तथा निम्न मंत्रसे जल दे-

वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्यप्रवराय च।
अनपत्याय भीष्माय उदकं भीष्मवर्मणे।।
वसूनामवताराय शान्तनोरात्मजाय च।
अर्घ्यं ददामि भीष्माय आजन्मब्रह्मचारिणे।।

इसमें यथाशक्ति सोने या चाँदी की भगवान् लक्ष्मी नारायण की मूर्ति बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा कर षोडशोपचार पूजन करना चाहिये. इसके अतिरिक्त पहले दिन भगवान् के हृदय का कमलपुष्पों से, दूसरे दिन कटिप्रदेश का बिल्वपत्रों से, तीसरे दिन घुटनों का केतकी पुष्पों से, चौथे दिन चरणों का चमेलीपुष्पों से तथा पाँचवे दिन सम्पूर्ण अँगों का तुलसी की मँजरियों से पूजन करना चाहिये. नित्यप्रति **'ओम नमो भगवते वासुदेवाय'** मंत्र का १०८ बार या अधिक से अधिक जितना सम्भव हो सके, जप करना चाहिये तथा मंत्र में स्वाहा पद जोड़कर उससे घृतमिश्रित तिल, चावल और जौ से अग्नि में हवन करना चाहिये. व्रत के पाँच दिनों में सामर्थ्य अनुसार निराहार, फलाहार, एकभुक्त, मिताहार या नक्तव्रत करना चाहिये, इस व्रतमें पँचगव्यपान की विशेष महिमा है. व्रत के अन्त में पारणा के समय ब्राह्मण-दम्पति को भोजन कराकर स्वयं भोजन करना चाहिये. इस व्रत में पद्म-पुराणोक्त कार्तिक मास के माहात्मय का पाठ या श्रवण करना चाहिये.

चैन्नई+ श्रीरामेश्वरम् धाम वार्षिकोत्सव

वर्ष 2020 में 14 से 18 जनवरी को चैन्नई में प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिकोत्सव एवं 19 से 21 जनवरी तक श्रीरामेश्वरम् धाम में वार्षिकोत्सव का आयोजन होगा.

इच्छुक प्रेमी जो चैन्नई के रास्ते श्री रामेश्वरम् धाम जाना चाहते हैं उनको 17 जनवरी शाम तक अथवा 18 जनवरी प्रातः तक चैन्नई पहुँचना चाहिए- उन प्रेमियों को चैन्नई से श्रीरामेश्वरम् धाम जाने के लिए 18 जनवरी को रेलगाड़ी संख्या 16851 रामेश्वरम् एक्स. जो रात्रि 7:15 बजे चलकर रामेश्वरम् 19 जनवरी को प्रातः 8:35 बजे पहुँचेगी, में आरक्षण करवा लेना चाहिए. इसी प्रकार जो प्रेमी चैन्नई आकर अपने नगर की की ओर प्रस्थान करना चाहते हैं- उन प्रेमियों को रामेश्वरम् से 21 जनवरी को 16852 जो रामेश्वरम् से सायं 5 बजे चलकर चैन्नई 22 जनवरी को प्रातः 6:35 बजे पहुँचेगी- में रिजर्वेशन आवश्यक रूप से करवा लेना चाहिए. चैन्नई से जिन प्रेमियों की 22 जनवरी को वापसी के लिए सीधी गाड़ी नहीं हो तो वे यात्रा के मध्य शहर जैसे आगरा आदि जहाँ से दूसरी गाड़ी उनको अपने शहर के लिये मिले- इस हिसाब से आरक्षण करवा लेना चाहिए. जो प्रेमी रामेश्वरम् से अन्यत्र कहीं जाना चाहते हों- वे उसी हिसाब से अपना कार्यक्रम बना सकते हैं. **चैन्नई से तिरुपति + वेल्लूर अथवा समीपस्थ क्षेत्रों में दर्शन के लिए जो प्रेमी जाना चाहते हैं वे प्रेमी श्री नवीन कुमार 98401-66599 से मार्गदर्शन/सहयोग प्राप्त कर सकते हैं.**

नोट : जयपुर के प्रेमी अमरापुर दरबार से व अन्य शहरों के प्रेमी अपने शहर की दरबार (प्रेम प्रकाश आश्रम) से अनुमति लेकर ही रिजर्वेशन करवायें. प्रेमियों के आने जाने का विवरण आश्रम व्यवस्थापक/सेवा मण्डलियां 98400 85161 (प्रकाश जी), 98411 44366 (नरेश जी) जी को आवश्यक रूप से नोट करावें.

गुरु वचनों का करें आदर

प्रातः स्मरणीय मंगलमूर्ति परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज १६ शिक्षाओं के माध्यम से हमारे चक्षु खोलने के उद्देश्य से कहते हैं कि अपने गुरु पर सदैव पूर्ण विश्वास रखो. उनकी कही हर बात को मानो. कभी भी अपने गुरु महाराज की कही बात को ग़लत मत समझना.

वेद गुरु के वचन पर नित, तुम करो विश्वास जी।
अटल श्रद्धा धार मन में, भ्रम कर सब नास जी।।

हो सकता है, जब गुरु महाराज जी कोई बात हमें कह रहे हों और वह बात उस समय हमें अच्छी न लगे; क्योंकि जिस उद्देश्य के लिए यह बात कही जा रही हो, उस उद्देश्य को हम समझ ही नहीं पा रहे हों. अतः अपने गुरु महाराज पर अपार श्रद्धा होनी चाहिए. गुरु महाराज सदैव अपने शिष्य की केवल भलाई ही चाहते हैं. हमारी भलाई, न केवल इस लोक में, परंतु परलोक में भी देखते हैं. हमारे गुरु महाराज के पास वह दृष्टि है जिससे वह हमारा परलोक भी देख सकते हैं. चूँकि हम केवल अपना वर्तमान ही देख पाते हैं, इसलिए हमारे निर्णयों का परिणाम हम केवल हमारी चाहना के अनुसार ही देखना चाहते हैं. हालाँकि, हो सकता है, हमारे द्वारा लिये गए किसी निर्णय का परिणाम अभी अच्छा न आए और भविष्य के गर्भ में उसका और भी अच्छा परिणाम छिपा हो जो कि हमें अभी नहीं दिख रहा हो. इसे केवल हमारे गुरु महाराज ही समझ सकते हैं. इसलिए गुरु महाराज के प्रति भ्रम बिल्कुल नहीं होना चाहिए. दूसरे, हम जब भी कोई कार्य करने को जाते हैं तो हमारा साक्षी (अंतर्मन) हमें सही मार्ग पर चलने की सदैव सलाह देता है. परंतु, कई बार यह भी देखा गया है कि हम अपने साक्षी की ओर ध्यान न देकर ग़लत कार्य करने की ओर चल पड़ते हैं. आगे दी गई बोधकथा से इस बात को समझाने का प्रयास किया गया है.

५० घरों के एक छोटे-से गाँव में एक अमीर व्यक्ति जिसे सभी लोग चौधरी जी कहते थे, रहता था. उनके पास एक सफ़ेद रंग का घोड़ा था. उसी गाँव में एक ग़रीब व्यक्ति भी रहता था, जिसके पास भी एक घोड़ा था जो काले रंग का था. उस निर्धन व्यक्ति का काले रंग का घोड़ा सफ़ेद रंग के घोड़े से ज्यादा तेज़ गति से दौड़ता था. अतः जब भी गाँव के लोग घोड़ों के सम्बन्ध में बात करते थे तो यह कहना नहीं भूलते थे कि काला घोड़ा, सफ़ेद घोड़े से तेज़ दौड़ता है. यह बात हमेशा ही उस अमीर व्यक्ति को बुरी लगती थी और उसको लगता था कि इस प्रकार की बातें गाँव में उसकी प्रतिष्ठा को प्रभावित करती हैं. एक दिन उसने उस ग़रीब व्यक्ति को अपने घर बुलाया और कहा कि क्यों न हम दोनों अपने घोड़ों की दौड़ करा लें जिससे यह सिद्ध हो जायेगा कि किसके घोड़े में ज़्यादा विशेषताएँ हैं. ग़रीब व्यक्ति, चौधरी साहब की बात को मान गया और दूसरे दिन ही इस दौड़ का आयोजन निश्चित कर लिया गया.

अगले दिन, निश्चित समय पर, आयोजन स्थल पर घोड़ों की दौड़ प्रतियोगिता देखने के लिए गाँव के सभी लोग एकत्रित हुए. चौधरी साहब एवं वह निर्धन व्यक्ति अपने-अपने घोड़ों पर सवार हुए और दौड़ प्रारम्भ हुई. दौड़ के अंतिम पड़ाव में चौधरी साहब का घोड़ा कुछ पिछड़ने लगा, जो कि चौधरी साहब को नागवार गुज़रा; क्योंकि वो किसी भी क़ीमत पर घोड़ों की दौड़ प्रतियोगिता में हारना नहीं चाहता था. अतः उसने अपने बल का प्रयोग कर दौड़ को जीतना चाहा. जैसे ही चौधरी साहब ने बल प्रयोग करने का सोचा, उनके अंतर्मन से एक आवाज़ आई कि यह एक ग़लत कार्य होगा. परंतु, उसने अपने साक्षी (अंतर्मन की आवाज़) पर ध्यान नहीं दिया एवं उस ग़रीब व्यक्ति को आदेश देते हुए कहा कि अपने घोड़े को मेरे घोड़े के पीछे रखो ताकि यह प्रतियोगिता मैं जीत सकूँ. उस ग़रीब व्यक्ति ने यह न चाहते हुए भी अपने घोड़े को

चौधरी साहब के घोड़े के पीछे कर दिया. फिर चौधरी साहब से अनुमति लेकर उसने चौधरी जी को कहा कि मैं आपका अभिप्राय समझ गया हूँ- आप इस प्रतियोगिता को बलपूर्वक जीतना चाह रहे हैं, जो कि अनैतिक कार्य होगा. गाँव के सभी लोग जिन्हें इस बात का पता नहीं होगा, वह आपको ही जीता हुआ समझेंगे एवं आपके गुणगान करेंगे. परंतु, आपके अंदर का साक्षी, जो सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिमान है, वो जानता है कि यह प्रतियोगिता आपने ग़लत तरीके अपनाकर ही जीती है. उस साक्षी को आप क्या जवाब देंगे? आप अपने साक्षी से पूछें कि वास्तव में इस प्रतियोगिता में विजेता कौन है? आपका साक्षी आपको सही उत्तर देगा. उस ग़रीब व्यक्ति की यह बात सुनकर चौधरी साहब को बहुत शर्मिंदगी हुई. अपनी ग़लती का अहसास कर चौधरी साहब ने मन ही मन सोचा कि, इस व्यक्ति ने जो बात कही है, वह एकदम सत्य है, वास्तव में विजयी तो यही व्यक्ति है.

इस प्रकार, हर व्यक्ति के अंदर साक्षी विराजमान है एवं जब भी हम कोई ग़लत काम करने जाते हैं हमारा साक्षी हमें अंदर से आवाज़ देता है कि यह ग़लत काम करने जा रहे हो, इसे मत करो. परंतु, यदि हम उस समय अपने साक्षी की आवाज़ को भी नज़रअंदाज़ कर देते हैं तो वह बुरा काम हमसे हो ही जाता है. अतः गुरु महाराज जी कहते हैं कि अपने साक्षी की आवाज़ को ध्यान से सुनो एवं किसी भी प्रकार का बुरा काम नहीं करो.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के हाजरांहजूर सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज भी अपनी अमृतमयी वाणी में बार-बार हम लोगों को समझाइश दे रहे हैं कि किसी का बुरा करना तो दूर, किसी का बुरा भी नहीं सोचो. सदैव अपने गुरु महाराज के कहे वचनों पर चलो. कभी भी मन में यह विचार कदाचित नहीं लाना चाहिए कि अमुक व्यक्ति का नुक़सान हो. हमें सदा ही दूसरों की भलाई के बारे में ही सोचना चाहिए. आदर्श स्थिति तो यह होगी कि हम सोचें कि चाहे मेरा नुक़सान हो जाए परंतु दूसरे का सदैव भला ही हो. कई बार हम मन में अहंकार का भाव आने के कारण दूसरों को भला बुरा कह देते हैं. जब कुछ समय बाद, हम हमारा यह शरीर त्याग कर इस दुनिया को छोड़ कर परलोक जाएँगे तब हमारे अपने अंग ही हमारे साथ नहीं चलेंगे तो फिर अन्य संपत्तियों की तो बात ही क्या है. ज़रा सोचें, रावण जो अपने समय में ब्रह्माण्ड में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति कहा जाता था, आज कहाँ है? आज सहस्रबाहु कहाँ है, जिसकी हजार बाहें थीं एवं जो रावण के दस सिरों को अपनी बाहों में जकड़कर अपने बच्चों का मनोरंजन करता था. कहाँ है बाली, जिसने रावण को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया था. कहाँ है ताकतवर हिरण्यकशिपु? कहाँ है महर्षि कपिल देव जिसने एक क्षण में राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को राख में परिवर्तित कर दिया था. कहने का तात्पर्य यह है कि जब इतने बलशाली एवं बाहुबली व्यक्ति भी नहीं रहे तो फिर हम और आप की कितनी क्षमता है. इस धरा पर कोई भी व्यक्ति सदैव रहने के लिए नहीं आया है. अपने कर्मों के अनुसार फल भोग कर सभी को एक दिन इस संसार से कूच करना ही है. फिर यह प्रपँच क्यों और किसके लिए?

-प्रह्लाद सबनानी, ग्वालियर

रामकथा की महिमा

रामकथा सुर धेनु सम सेवत सब सुख दानि।
सत समाज सुर लोक सब को न सुनै अस जानि।।

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।।
रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी।।

भगवान शंकर पार्वतीजी से कहते हैं- 'श्रीरामचन्द्र जी की कथा कामधेनु के समान सेवा करने से सब सुखों को देने वाली है और सत्पुरुषों के समाज ही सब देवताओं के लोक हैं, ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा! श्रीरामचन्द्रजी की कथा हाथ की सुन्दर ताली है, जो सन्देह रूपी पक्षियों को उड़ा देती है. फिर रामकथा कलियुगरूपी वृक्ष को काटने के लिये कुल्हाड़ी है. हे गिरिराजकुमारी! तुम इसे आदरपूर्वक सुनो.

श्रीमद् भागवत चिन्तन

वियोग : भगवान् श्रीकृष्ण अब द्वारका जाने के लिए तैयार हुए हैं. कुन्तीजी ने जब सुना है- श्रीकृष्ण द्वारका जा रहे हैं. कुन्तीजी को भगवान् का वियोग सहन नहीं हुआ. दिन भर मैं श्रीकृष्ण का दर्शन करती रही हूँ. श्रीकृष्ण मेरी आँखों से दूर न जायँ. जिसके वियोग में आपको दुःख होता है- वहाँ आपका सच्चा प्रेम है. जब तक जीव को श्रीकृष्ण का वियोग सहन होता है, श्रीकृष्ण के वियोग में वह संसार में रमता है- तब तक वह बराबर भक्ति नहीं करता है. भक्ति का आरम्भ तब होता है- भगवान् के वियोग का जब दुःख होता है. मैं इतना बड़ा हुआ- आज तक मुझे भगवान् का दर्शन नहीं हुआ. श्रीकृष्ण-वियोग का कुन्तीजी को दुःख है- भगवान् मेरी आँखों से दूर न जायँ.

विश्वास : आजकल बहुत-से लोग डॉक्टर को बहुत मानते हैं. भगवान् को इतना नहीं मानते हैं, जितना डॉक्टर को मानते हैं. डॉक्टर में बहुत विश्वास रखते हैं. ऐसा समझते हैं कि डॉक्टर ने मुझे बचा लिया. अरे, डॉक्टर क्या बचायेगा- जो काल के आधीन है- वह दूसरे को क्या बचा सकता है? डॉक्टर में बचाने की शक्ति हो तो उसका मरण क्यों होता है? बचाने वाले भगवान हैं. रक्षण भगवान् करते हैं. भगवान् को मानो. भगवान् के उपकार का स्मरण करो. सभी जीवों का रक्षण भगवान् करते हैं. परीक्षित् का रक्षण किया है.

घर की शोभा : घर की शोभा भगवान् से होती है. जिस घर में भगवान् की सेवा नहीं है, वह घर श्मशान के जैसा है. जिस घर में भगवान् की सेवा-पूजा नहीं होती है, उस घर में पानी भी नहीं पीना चाहिये. वह घर बहुत ही अशुद्ध है.

घर की शोभा भगवान् से है. आपके घर में जो सबसे अच्छी जगह हो, वहाँ भगवान् को रखो. आजकल बहुत-से लोग रसोईघर में ही एक साधारण-सी जगह में भगवान् को बैठा देते हैं. भगवान् मालिक हैं. भगवान् लक्ष्मीजी के पति हैं. घर छोड़ना नहीं, घर में सेवक बनकर रहो. भगवान् को मालिक मानो- मेरे घर के मालिक भगवान् हैं. भगवान् ने यह सब कुछ दिया है. जो घर में सेवक बनकर रहता है, उसका मन नहीं बिगड़ता. जो अपने को मालिक समझता है, उसका मन बिगड़ जायेगा. जीव तो तन का भी मालिक नहीं है, वह धन का मालिक कैसे हो सकता है?

सन्तों का मरण मंगलमय : सन्तों का मरण मंगलमय होता है. भगवान् के धाम में कैसे जाते हैं- देखना है. सन्तों का जन्म साधारण मानव के जन्म जैसा ही होता है, किंतु मरण मंगलमय होता है. इसीलिये सन्तों की पुण्यतिथि के दिन उत्सव किया जाता है. श्रीराम जिस दिन प्रकट हुए हैं- रामनवमी का उत्सव होता है, जन्माष्टमी का उत्सव होता है. भगवान् स्वधाम में जाते हैं- उस दिन उत्सव नहीं होता है. सन्त संसार छोड़ करके भगवान् के धाम में जिस दिन जाते हैं- उस दिन संत की पुण्यतिथि मनाई जाती है. सन्तों का मरण मंगलमय होता है. भीष्म पितामह महान् सन्त हैं. महान् ज्ञानी भक्त हैं. ऐसे समर्थ हैं कि युद्ध में गिर गये हैं- उसी समय काल पकड़ने के लिये आता है. काल को कहा- 'जा, यहाँ से. तेरे साथ मैं नहीं जाऊँगा. मेरे भगवान् मुझे लेने के लिये आयेंगे. मैं भगवान् के साथ जाऊँगा. मैं तेरे अधीन नहीं हूँ.

पाप : भगवान श्रीकृष्ण भीष्म पितामह से कहते हैं- दादा! आपने पाप किया नहीं है, आपने पाप देखा है- उसकी यह सजा है. धर्म की गति अति सूक्ष्म होती है. जो पाप को देखता है, उसको मार पड़ती है. पाप किया दुर्योधन ने, पाप किया दुःशासन ने. वह पाप आपने देखा है. अन्धेर नहीं है- देर है. धर्म की गति अति सूक्ष्म है. आपने पाप को देखा है.

भगवान् ने कहा- 'दुःशासन द्रौपदी को सभा में ले आया था. दुर्योधन को मन में आता है- सो बकता है. उस समय सभा में मैं आया था. दुर्योधन-दुःशासन तो महामूर्ख हैं. मुझे आश्चर्य यह हुआ कि भीष्म पितामह जैसे, द्रौणाचार्य जैसे महान् ज्ञानी-तपस्वी इस सभा में बैठे हैं, जिस सभा में एक महान् पतिव्रता, आर्य सन्नारी, आपके घर की पुत्रवधू द्रौपदी का अनादर होता है, दुःशासन साड़ी खींचता है. आपके जैसे महान् पुरुष वहाँ बैठे हुए देखते हैं. .... आपने पाप को देखा है. जो पाप को देखता है, उसकी सजा भी होती है. पाप देखना नहीं, दूसरे का पाप सुनना नहीं, दूसरे किसी के पाप का जीभ से उच्चारण करना नहीं. धर्म की गति अति सूक्ष्म है. दादा! आपने पाप किया तो नहीं है, आपने पाप देखा है. उसकी यह सजा मैंने आपको दी है.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

दीपावली विशेष (27 अक्टूबर 2019)

दीप पुँज का पावन पर्व- दीपावली

दीप मालाओं का यह त्योहार अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है. दीपावली का अर्थ दीप पुँज प्रकाशित कर तिमिरता को हरना! त्योहार का अर्थ- **'तिमिर हरन्तोति'** अर्थात् अंधकार, अज्ञान, दुर्दिन, दुर्भिक्ष व विपति का हरण करना. इसी पर्व से सम्बन्धित मुख्य पाँच पर्व हमारे भारतीय संस्कृति में प्रमुख हैं. धनतेरस, नरक चतुर्दशी, महालक्ष्मी पूजन (दीपावली), गोवर्धन पूजा (अन्नकूट) और भैयादूज!

कार्तिक अमावस्या अर्थात् दीपावली को प्रातःकाल उठकर स्नान करके पूजा पाठ व बड़ों के आगे नत् मस्तक होकर आशीर्वाद लेना चाहिए. जिससे लक्ष्मी माता प्रसन्न होकर दुःख-दर्द का हरण कर धन-सम्पति से भरपूर वैभव प्रदान करती है. इस दिन माँ लक्ष्मीदेवी का श्रद्धा भाव से पूजन स्तुति करनी चाहिये. अपने गृह व प्रतिष्ठान में शुभ-लाभ, स्वास्तिक चिन्ह आदि के प्रकोष्ठ बनाकर सायंकाल को दीप जलाकर निम्न श्लोक का जाप करना चाहिये-

शुभं करोति कल्याण, आरोग्यं धन सम्पदा,
शत्रु बुद्धि विनाशाय, दीप ज्योति नमोस्तुते।

इस श्लोक का जाप करने से जीवन में सुखमयी सम्पन्नता, आरोग्यता, धन व मोक्ष अर्थात् कल्याण की प्राप्ति होती है.

'श्री' की पूजा का विधान प्रदोष काल में है. 'श्री' लक्ष्मी का ही एक नाम है. प्रदोष काल का अर्थ है न दिन न रात, अर्थात् न प्रकाश न अन्धकार, न पाप न पुण्य, न दुःख न सुख, न जन्म न मरण, वहाँ मात्र अखण्ड आनन्द होता है. यही 'श्री' लक्ष्मी की पूजा का अर्थ है. इसी पूजा का प्रतीक है दीपक! वह जिस प्रकाश की ओर संकेत करता है वह सूर्य या चन्द्रमा का प्रकाश नहीं अपितु भीतर की चेतना को जाग्रत करना है.

इस पर्व की अनेक लोक कथाएँ आस्था व विश्वास पर सिचिंत हैं. शास्त्रों के अनुसार भगवान श्रीराम के अयोध्या आगमन पर वहाँ के नगरवासियों ने पूरे नगर, भवन, घर, प्रतिष्ठानों में सजावट, दीपमालाओं, आरती, रंगोली आदि करके भगवान का अभिनन्दन किया. ऐसे ही पौराणिक कथाओं के अनुसार दैत्यराज बलि ने देवी-देवताओं सहित लक्ष्मी माता को अपने कारागार में बंद कर रखा था. तब भगवान वामन का अवतार लेकर तीन पग में समस्त स्वर्गादि माँगकर अमावस्या के दिन बलि राजा को पाताल लोक भेज दिया. तब भगवान ने लक्ष्मी सहित सभी देवताओं को मुक्त किया. उस दिन माँ लक्ष्मी के आने की खुशी में सभी स्थानों को दीपों के प्रकाश से आलोकित किया गया. इस कारण भी इस दिन दीपावली महापर्व मनाया जाता है. दीपावली की मुख्य विशेषता है स्वच्छता और प्रकाश! जहाँ ये दोनों होंगे वहां 'श्री' अर्थात् सौभाग्य व वैभव का आगमन होगा.

हृदय की स्वच्छता है अव्यक्त ज्ञान की प्राप्ति में व अपने हृदय में भगवान के दर्शन से! ये परम प्रकाश के दर्शन तत्वज्ञानी महापुरुष की शरण में जाने से ही प्राप्त होंगे. **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** अर्थात् अंधकार से प्रकाशमय की ओर प्रेरित करता है ये पवित्र दीपावली महापर्व!

-प्रेमप्रकाशी साधक
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, स्वामी टेऊँराम नगर, कोतरपुर, अमदाबाद

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली का

देशाटन

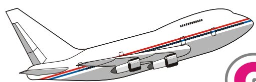

यात्रा-दर्शन

श्रीहरिद्वार 9 से 12 सितम्बर

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली हिमाचल प्रदेश के रमणीक स्थल धर्मशाला शहर में ३८ दिन निवास करने के पश्चात् ९ सितम्बर को प्रातः ८ बजे श्रीहरिद्वार के लिए सड़क मार्ग से रवाना हुए.

श्रीहरिद्वार में ९ सितम्बर को रात्रि ८:१५ बजे भोपतवाला स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचे. यहाँ पर सेवा संभाल करने वाले संत रमेशलाल, संत हिमांशुलाल के साथ संत हेमंतलाल, संत सुमितलाल, संत यशलाल के अलावा जयपुर से पधारे संत नन्दलाल जी, ब्यावर से पधारे संत शम्भूलाल व अशोक जेठानी, कुमार वीधाणी (जयपुर) एवं अन्य प्रेमियों द्वारा पूज्य महाराजश्री संतों का स्वागत सत्कार किया गया.

१० सितम्बर को पूज्य गुरु महाराज के दर्शनार्थ उतराखण्ड राज्य के मंत्री श्री मदन कौशिक जी भी आश्रम पर पधारे. आपने पूज्य गुरु महाराज जी का अभिनन्दन पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए किया.

आश्रम, घाट, स्मृति स्थल का अवलोकन निरीक्षण भी पूज्य गुरु महाराज जी द्वारा किया गया. हरिद्वार में कुम्भ मेला २०२१ में आयोजित होगा एवं इसी मेले में चैत्र मेले की शताब्दी भी मनाया जाना प्रस्तावित है- इसी को ध्यान में रखते हुए प्रेम प्रकाश आश्रम भवन में आवश्यक मरम्मत कार्यों की शुरूआत भी पूज्य गुरु महाराज जी की आज्ञा से की गई.

पूज्य स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, पूज्य स्वामी जयदेव जी महाराज, संत ढालूराम, संत कमललाल (जयपुर), संत विनेश (दिल्ली), श्री जयकिशन टेकवानी (जयपुर), श्री जैसाराम (कोटा) पूज्य गुरु महाराज जी की मण्डली में साथ हैं. १२ सितम्बर को प्रातः १०:३० बजे श्रीवृन्दावन धाम के लिए प्रस्थान हुआ.

श्रीवृन्दावन धाम 12 सितम्बर

१२ सितम्बर को रात्रि ८:३० बजे श्रीवृन्दावन धाम के परिक्रमा मार्ग पुराने कालियदह मंदिर के पास बने श्री प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचे. यहाँ पर आश्रम की सेवा संभाल देखने वाले हांगकांग के श्री कैलाश-किरण रूपचंदानी जी द्वारा पूज्य गुरु महाराज जी संत मण्डल का स्वागत किया गया.

१३ सितम्बर को प्रातः श्रीबांकेबिहारी जी के दर्शन करने के उपरांत १० बजे जयपुर के लिए प्रस्थान हुआ.

जयपुर 13 से 23 सितम्बर

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज १३ सितम्बर को दोपहर १:३० बजे श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर दरबार पहुँचे. गुरुनगरी जयपुर के भाग्यप्रवर प्रेमी भक्तों को २३ सितम्बर तक पूज्य गुरु महाराज जी के दर्शन-सत्संग का अखुट लाभ मिला. देश विदेश से भी अनेकों प्रेमी गुरु महाराज जी के दर्शन सत्संग की आस लिये जयपुर पहुँचे.

माता लीलावंती व माता वसीदेवी वर्सी उत्सव

गुरु नगरी जयपुर में खज़ाने वालों का रास्ता स्थित माता लीलावंती सत्संग भवन में पूज्य माता लीलावंती जी का ४६ वाँ एवं पूज्य माता वसीदेवी का तृतीय वर्सी उत्सव २१ से २३ सितम्बर तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज श्री अमरापुर संत मण्डली की पावन उपस्थिति में बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया.

दरबार की देखरेख करने वाले श्री बसंतलाल जी के साथ सत्संग भवन के ट्रस्टियों एवं प्रेमियों ने मिलकर गुरु महाराज जी संतों का भव्यतम स्वागत किया. कार्यक्रमों के अन्तर्गत तीन दिवसीय श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अखण्ड पाठ, आशादीवार नित्य नियम से होता रहा. प्रातः सायंकाल सत्संग ज्ञानगंगा में हजारों हजार भक्तों ने आत्मिक मौज लूटी. पूज्य गुरुदेव भगवान सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के साथ पूज्य स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज, संत रमेशलालजी (हरिद्वार), संत हरिओमलाल जी, संत नंदलाल जी, संत हरीशलाल (जयपुर), संत जीतूराम, संत हेमंतलाल, संत लक्ष्मणलाल, भगत हरदास, भगत माणिकमुक्त सहित अमरापुर विद्यार्थी मंडल भी शामिल हुआ. वर्सी उत्सव में माता लीलावंती

दरबार की शोभा भी अवर्णनीय रही.

ब्यावर 24 से 26 सितम्बर

राजस्थान राज्य की ब्यावर नगरी, जो तिलपट्टी के लिए देश दुनिया में अपना विशेष स्थान रखती है- यहाँ पर रहने वाले निवासी जिसमें भी सिंधी समाज अत्यंत हर्षित हो रहा था- शुभ अवसर था- श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली का २४ सितम्बर प्रातः मंगल आगमन!

गुरुदेव भगवान संत मण्डली द्वारा जयपुर से प्रातः ७:३० बजे ब्यावर के लिए सड़क मार्ग से प्रस्थान किया गया. प्रातः १० बजे ब्यावर की नगरसीमा पहुँचने पर संत शम्भूलाल के साथ बड़ी संख्या में उपस्थित प्रेमियों ने श्री गुरुदेव भगवान का भव्य स्वागत किया. गाड़ियों की रैली में पूज्य गुरु महाराज जी को नंद नगरी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम लाया गया. उत्साही नौजवानों + बालिका मण्डली एवं महिला मण्डली द्वारा आश्रम व पहुँच मार्ग को श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के वरिष्टजनों व संतश्री के निर्देशन में भव्यतम रूप से शृँगारित गया था. गुरुदेव भगवान संतों का जब नन्दनगर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर पदार्पण हुआ तब आश्रम में व स्वागतार्थ बाहर उपस्थित सैकड़ों प्रेमी प्रसन्नता के आवेग में अतीव प्रसन्न हो उठे अपने प्यारे गुरुदेव के दर्शन पाकर. इस शुभ माँगलिक मौके पर शहनाई ढोल बजने लगे- बाल बालिका मण्डली फूलों की वर्खा करने लगी, मण्डली व शहर के वरिष्टजन सत्गुरु महाराज जी संत मण्डल का फूलमाला पहनाकर आत्मीय अभिनन्दन करने लगे. कहने का अभिप्राय हर ओर आनन्द ही आनन्द बरसने लगा. गुरुदेव के दर्शनों को प्यासी सैकड़ों जोड़ी आँखें अपने प्यारे गुरुदेव के दर्शन पाकर निहाल हो उठीं.

पूज्य गुरु महाराज जी के साथ मण्डली में पूज्य स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज, संत हरिओमलालजी, संत ढालूराम, संत कमललाल (जयपुर), विद्यार्थीगण राहुल, भावेश, अविनाश, भगत श्री हरदास जी, श्री माणिकमुक्त, सेवकगण श्री जयकिशन टेकवानी (जयपुर), श्री कैलाशलाल (जयपुर), श्री मोहन कुमार शिवनानी (अजमेर), श्री हीरालाल के अतिरिक्त अन्य सेवाधारी प्रेमी शामिल थे.

प्रेम प्रकाश आश्रम, ब्यावर वार्षिक मेले के लिए आश्रम परिसर से सत्संग समारोह स्थल 'अशोक पैलेस' तक आधा किलोमीटर क्षेत्र को दीपावली की भाँति सजाया गया था, शाम को पूरा मार्ग विद्युतीय कलाओं से जगमगा उठता था.

सत्संग समारोह स्थल 'अशोक पैलेस' के व्यवस्थापक जो कि प्रेमप्रकाशी श्री नरेश कुमार मदानी है- इस परिवार के विशेष आग्रह को स्वीकार करते हुए यहीं पर पिछले चार सालों से दिव्य सत्संग समारोह आयोजित होता है. पैलेस के भव्य गार्डन को महोत्सव के लिए **'अमरापुर धाम'** नाम दिया गया था- प्रवेश द्वार को श्री अमरापुर दरबार, जयपुर के मुख्य द्वार की भाँति बनाया गया था, कलाकारों द्वारा इस कलाकृति को हूबहू अमरापुर दरबार के मुख्य द्वार की तरह बनाया गया था ऐसा लग रहा था मानों जयपुर में अमरापुर दरबार के मुख्यद्वार पर आ गये हों- कलाकारों के साथ इस सज्जा के लिए प्रारूप तैयार करने वालों को साधुवाद!

हाजरांहजूर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का संत मण्डली के साथ २४ सितम्बर को सायंकाल जब इसमें मंगल प्रवेश हुआ, तो सचमुच में अमरापुर दरबार ही हो गया यह सत्संग समारोह स्थल. सत्संग समारोह स्थल की साज सज्जा भी अनुपम रही! विशाल पण्डाल को मुख्यतः येलो थीम पर सजाया गया था डार्क लाईट येलो कलर के साथ कहीं कहीं व्हाईट व कुछ अन्य रंगों का भी सम्मिश्रण देखने को मिला. फूलों गुब्बारों आदि सजावटी वस्तुओं से पूरा सत्संग परिसर सजाया गया था. विशाल मंच के एक ओर श्रीमंदिर का निर्माण अनुपम रूप से किया गया था. मंच के पार्श्व में गुरुजनों के मनमोहक चित्र स्वरूप शोभायमान थे.

प्रेमी भक्तों ने प्रभु परमात्मा व गुरुदेव की भक्ति में विभोर होकर सद्गुरु महाराज संतों के श्रीमुख से निःसृत ज्ञानगंगा में आकंठ डुबकियाँ लगाईं.

२४ सितम्बर को पहुँचने के तुरंत बाद प्रातः हवन यज्ञ की पूर्णाहुति एवं सत्संग पश्चात् श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावंदन का मनोरम कार्यक्रम सम्पन्न हुआ.

२५ सितम्बर को **प्रेम प्रकाश महिला आश्रम**, किशनगंज में रात्रि ८ से ९ बजे तक सत्संग की मौज गुरु बाबा संतों के सानिध्य में हुई. यहाँ की सेवा करने वाली अमरापुरवासी माता सतीदेवी जिनका अमरापुर गमन सात महीने पूर्व हुआ था- को भी पुष्पाँजलि दी गई. सेवा संभाल देखने वाली माताओं ने गुरु महाराज संत मण्डली का आत्मिक अभिनन्दन किया.

२६ सितम्बर को आश्रम के श्रीमंदिर में प्रतिष्ठित श्रीविग्रहों व गुरुदेव के स्वरूपों का वेदमंत्र गायन से गुरुबाबा संतों के कर कमलों से विशेष पूजन- अभिषेक किया गया एवं नवीन वस्त्र धारण कराये गये.

आज ही प्रातः ९ से १२ बजे तक आयोजित सत्संग ज्ञानयज्ञ में मेले के उपलक्ष में रखे गये पाठों का भोग पारायण भी हुआ. सायंकालीन सत्संग के अंत में रात्रि ८ बजे पल्लव पाकर मेले

को पूर्णता दी गई गुरुदेव भगवान द्वारा. इस मौके पर गुरुदेव भगवान के मुखारविन्द से सद्गुरु टेऊँराम मंगलगान का जब गायन हुआ तब झूम उठे उपस्थित हजारों हजार भक्तजन.

ब्यावर मेले की ख़ास बातें-

सत्संग ज्ञान स्थली 'अशोक पैलेस' की रौनक ऐसी थी जैसे चैत्र मेले का लघु स्वरूप हो. यहाँ बनाये गये 'अमरापुर धाम' सभालय में २५०० से अधिक प्रेमियों के लिए बैठने की सुविधा थी और यह सत्संग समय पर खचाखच भरा रहता था, इसके अलावा सैकड़ों प्रेमी बाहर भी खड़े दिखाई पड़ रहे थे.

भव्यतम सत्संग समारोह में सेवाधारियों में से युवा मण्डली द्वारा चरण पादुका सेवा (चप्पल घर) की सेवा व्यवस्था भी सक्रिय रही, सुव्यवस्थित जूता घर सेवा के कारण किसी की भी चप्पल जूते ना तो गुम हुए न बदले गये.

'खण्डू गाँव' में तीनों दिन सायंकालीन सत्संग के पश्चात् भोजन भण्डारा सारी संगत के लिए बड़े ही प्रेम भाव से हुआ.

आश्रम से सत्संग स्थल जो कि आधा किलोमीटर की दूरी पर था, चलने फिरने में जिनको दिक्कत होती है, ऐसे प्रेमियों को लाने ले जाने के लिए आश्रम से वाहन सेवा भी प्रभावी रही.

श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, श्री प्रेम प्रकाश युवा मण्डली, श्री प्रेम प्रकाश महिला सेवा मण्डली द्वारा संत शम्भूलाल के मार्ग निर्देशन में समर्पण भाव से सेवा कार्यों को किया जा रहा था.

मेला स्थानीय प्रिन्ट मीडिया व दृश्य मीडिया में भी छाया रहा.

सिंधी सेन्ट्रल पंचायत एवं गणमान्य प्रेमियों द्वारा गुरुदेव संतों का नगरवासियों की ओर से २५ सितम्बर को सायंकालीन सत्संग में भव्य अभिनन्दन किया गया.

समारोह के लिए जिला व नगर पालिका प्रशासन का पूरा सहयोग रहा. उत्सव स्थल पर तीन दिन तक निरंतर फायर ब्रिगेड की गाड़ी भी खड़ी रही.

समारोह में २५ से अधिक शहरों से सैकड़ों प्रेमीजन शामिल हुए.

भीम 25 सितम्बर

२५ सितम्बर को ब्यावर से एक घंटे की सड़क यात्रा के पश्चात् छोटे से नगर भीम दोपहर ११:३० बजे पहुँचे. शहनाई ढोलवादन पुष्पवर्षा के साथ प्रेमियों द्वारा भव्यतम स्वागत किया गया. यहाँ के प्रेम प्रकाश मंदिर में ध्वजावंदन के पश्चात् सैकड़ों भक्तों ने पूज्य संत मण्डल गुरुदेव के श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञानामृत का रसपान किया. सत्संग समारोह के पश्चात् आम भण्डारे में भी नगरवासियों ने सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का भोजन भण्डारा पाया. दोपहर बाद ब्यावर वापस पहुँचे.

नसीराबाद 27-28 सितम्बर

ब्यावर आश्रम वार्षिकोत्सव की पूर्णता के पश्चात् पूज्य गुरुदेव भगवान संत मण्डली के साथ २७ सितम्बर को प्रातः ८ बजे चलकर प्रातः ९:३० बजे अजमेर जिले के नसीराबाद शहर पहुँचे. नगर नाके पर श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली व नगर के प्रमुख नागरिकों ने पूज्य गुरु महाराज जी का आत्मीयता से स्वागत किया. अम्बेडकर सर्किल से पूज्य महाराजश्री के स्वागत में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई. एक सजे हुए रथ में पूज्य गुरु महाराज जी संतों को विराजमान किया गया था. बैंडबाजे शहनाई ढोलवादन के साथ सैकड़ों प्रेमीजन नाचते झूमते हर्षित हो रहे थे. स्टेशन रोड होते हुए सिंधी मोहल्ला स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचे. आश्रम में चल रहे हवन-यज्ञ को पूर्णाहुति देकर सम्पन्न कराया पूज्य गुरुदेव भगवान संतों ने. इसके पश्चात् सत्संग ज्ञान गंगा में सैकड़ों प्रेमियों ने आत्मिक आनन्दामृत का छककर रसपान किया. सत्संग यज्ञ के पश्चात् श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावंदन हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ. आम भण्डारे में भी हजारों भक्तों ने भोजन प्रसादी पाई.

सायंकालीन सत्संग सभा में तो जैसे नसीराबाद का समूचा सिंधी समाज उमड़ आया हो ऐसा देखने में आया, बाहर तक बड़ी संख्या में प्रेमी खड़े होकर भी संतों सद्गुरु भगवान के दर्शन करके ज्ञानवाणी का अमृतपान करते दिखाई पड़ रहे थे. नगर के सिंधी समाज व प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली द्वारा पूज्यश्री संतों का सार्वजनिक अभिनन्दन सायंकालीन सत्संग में किया गया. सत्संग सभा के पूर्व बाल मण्डली द्वारा आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरितामृत पर आधारित लीला का मंचन भी सराहनीय रहा.

नसीराबाद में २८ सितम्बर गुरुदिवस पावन शुभ शनिवार को प्रातः ९:३० से दोपहर १२ बजे तक सत्संग अमृत-रसधारा के प्रवाह में सैकड़ों प्रेमीजन डूबने उतराने लगे. सत्संग अमृत के पश्चात् वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष में रखे गये पाठों का भोग पारायण हुआ. आरती के पश्चात् मेले की समाप्ति का पल्लव पाकर पूज्य गुरुदेव भगवान ने नसीराबाद आश्रम वार्षिकोत्सव को पूर्ण किया. सद्गुरु टेऊँराम मंगलधुनि गायन पश्चात्-आज सर्वपितृ अमावस्या के उपलक्ष में प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली द्वारा कन्या भोज एवं ब्रह्मभोज का आयोजन भी खास रहा. आम भण्डारा भी हुआ. दोपहर बाद ३ बजे गुरु महाराज संत मण्डली द्वारा केकड़ी के लिए प्रस्थान किया गया.

केकड़ी 28 सितम्बर

सायं ५:३० बजे अजमेर जिले की छोटी-सी नगरी केकड़ी

पहुँचे. पूज्य गुरु बाबा का मंगलमय दर्शन करके श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के साथ केकड़ी का समूचा सिंधी समाज प्रफुल्लित हो उठा. गाजे बाजे व फूलों की वर्खा करते हुए एक सुंदरतम शोभायात्रा में पूज्य गुरु महाराज जी संतों को गोशाला सत्संग भवन लाया गया. यहाँ पर सायंकालीन सत्संग ज्ञान अमृत सरोवर में केकड़ी व आसपास के नगरों कस्बों से आये सैकड़ों प्रेमियों ने आत्मिक आनन्दामृत का रसास्वादन लिया.

सत्संग के पश्चात् सिंधी मंदिर में संतों गुरुदेव के साथ सारी संगत के लिए भोजन भण्डारे का आयोजन किया गया था. अजमेर जिले की यात्रा पूर्ण कर पूज्य गुरुदेव भगवान संत मण्डली द्वारा रात्रि ८ बजे जयपुर के लिए प्रस्थान किया गया.

जयपुर 28 सितम्बर

रात्रि १०:३० बजे गुरु दरबार अमरापुर स्थान पहुँचकर विश्रामी हुए. २६ सितम्बर प्रातः ४:३० बजे हरिद्वार के लिए प्रस्थान हुआ.

हरिद्वार 29 से 30 सितम्बर

जयपुर से वायुयान में चलकर प्रातः ७ बजे देहरादून एयरपोर्ट पहुँचे. वहाँ से कार द्वारा प्रेम प्रकाश आश्रम भोपतवाला में प्रातः ८:३० बजे पहुँचे. जयपुर से पधारे संत नन्दलाल जी, संत लक्ष्मणलालजी, हरिद्वार आश्रम की सेवा संभाल देखने वाले संत रमेशलालजी, संत हिमांशुलाल, संत सुमितलाल, निर्माण सेवा कार्यों के लिए आये हुए श्री अशोक कुमार जेठानी, श्री गोरधनदास आसनानी जी व अन्य सेवकों ने पूज्य गुरु महाराज जी का हार्दिक स्वागत किया. यहाँ पर चल रहे मरम्मत कार्यों का अवलोकन किया गया. आगे के कार्यों के लिए भी पूज्य गुरु महाराज जी द्वारा संतों सेवाधारियों को आवश्यक निर्देश दिये गये. सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द घाट एवं अन्य स्थानों पर गुरुजनों की पावन स्मृति में बनवाये जा रहे घाटों के सम्बन्ध में भी संतों सेवकों को उचित मार्गदर्शन करके निर्देशित किया गया. आवश्यक सरकारी कार्यों को पूरा करके पूज्य गुरु महाराज जी द्वारा ३० सितम्बर को दोपहर २ बजे दिल्ली के लिए प्रस्थान किया गया.

दिल्ली 30 सितम्बर

हरिद्वार से कार द्वारा चलकर ३० सितम्बर रात्रि ८ बजे मलकागंज स्थित प्रेम प्रकाश सिंधी मंदिर पहुँचे. यहाँ पहुँचने पर पूज्य स्वामी जयदेव जी महाराज, संत विनेशलाल ने बड़ी संख्या में उपस्थित प्रेमीजनों के साथ पूज्य महाराजश्री का हार्दिक अभिनन्दन किया. काफी समय बाद दिल्ली पधारने पर संगत के चेहरे अपने प्यारे गुरुदेव के दर्शन पाकर प्रफुल्लित हो रहे थे. १ अक्टूबर को प्रातः ६ बजे आस्ट्रेलिया जाने के लिए इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल की ओर रवाना हुए. पूज्य स्वामी जी के साथ संत हरिओमलालजी, संत हरीशलाल, संत ढालूराम, संत कमललाल (जयपुर) भी हैं.

आस्ट्रेलिया 1 अक्टूबर से

आस्ट्रेलिया के **पर्थ** शहर के लिए दिल्ली से प्रातः ६ बजे सिंगापुर एयरलाईन्स कं. के विमान से रवाना हुए. सिंगापुर सायंकाल ५ बजे पहुँचे- ६:४५ बजे विमान पर्थ के लिए रवाना हुआ. १-२ अक्टूबर की मध्यरात्रि १२ बजे पर्थ पहुँचे. पर्थ में रहने वाले श्री कन्हैयालाल-खिम्यादेवी, ने परिजनों के साथ मिलकर पूज्य गुरु बाबा संतों का स्वागत किया. श्री कन्हैयालाल के सुपुत्र श्री संजय-कविता मदान के निवास भवन पर गुरु महाराज मण्डली के निवास की व्यवस्था की गई थी.

२ अक्टूबर सांयकाल समुद्र दर्शन के साथ प्राकृतिक दृश्यावली का दर्शन किया गया. ७ बजे से ८:३० बजे तक निवास स्थल पर सत्संग की मौज मची जिसका इन्टरनेट माध्यम से लाईव प्रसारण भी देश दुनिया के प्रेमियों द्वारा देखा गया.

३ अक्टूबर दोपहर बाद चले प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करने समुद्र के तट पर बसे जंगल की ओर- जहाँ पर कंगारू एवं अन्य प्रजातियों के पशु पक्षियों के दर्शन हुए. ऐसे भी जीवों के दर्शन हुए जो २० घंटे दिन भर में सोते हैं. समुद्र तट पर हजारों साल पुरानी गुफा में ५० फुट तक नीचे गये जहाँ पर पाताललोक का पानी रिस रहा था, यहाँ पर क्रिस्टल के दर्शन भी हुए. सचमुच में रोमांचकारी दर्शन रहे. बाद में समुद्र किनारे बैठकर भजनानन्द के पश्चात् गुरुजनों एवं भगवान झूलेलाल की आरती की गई.

४ अक्टूबर को दोपहर ११:४० बजे विमान द्वारा चलकर सायं ५:३० बजे **मेलबर्न** पहुँचे. सुंदर रूप से बने अमरापुर धाम प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचकर प्रभु परमात्मा एवं गुरुजनों के दिव्य श्रीविग्रहों के दर्शन करके साष्टाँग दण्डवत् प्रणाम किया. उपस्थित भक्तों ने गुरुदेव भगवान संतों का आत्मीयता पूर्वक अभिनन्दन किया. भजन-आरती-पल्लव उपरांत श्री किशोर कुमार-रेनूदेवी के निवास भवन पर आये, यहीं पर गुरुदेव भगवान संतों के निवास की व्यवस्था की गई थी. भोजन प्रसादी पाकर विश्रामी हुए.

शुभ शनिवार ५ अक्टूबर को प्रेम प्रकाश आश्रम में ध्वजवंदना की गई. सत्संग की मौज में बड़ी संख्या में प्रेमीजन शामिल हुए. ६ अक्टूबर को महाष्टमी के अवसर पर हवन यज्ञ हुआ.

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन सानिध्यता में

प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा में

कार्तिकोत्सव दिव्य सत्संग समारोह

शुक्रवार 8 नवम्बर से मंगलवार 12 नवम्बर 2019 तक

प्रतिदिन सत्संग प्रातः 7 से 10 व सायं 5 से 8 बजे तक

कार्यक्रम

शुक्रवार 8 नवम्बर कार्तिक एकादशी पर्व	शनिवार 9 नवम्बर	रविवार 10 नवम्बर	सोमवार 11 नवम्बर	मंगलवार 12 नवम्बर, पल्लव
प्रातः 5 से 7 बजे कार्तिक स्नान, हवन एवं सत्संग (स्थान : भीतरिया कुण्ड) सायं 5 से 7 बजे सत्संग प्रेम प्रकाश आश्रम में	पूज्य गुरु महाराज जी के मंगल आगमन पर आश्रम पर स्वागत एवं बधाई गान सायं 4 बजे	कन्या भोज प्रातः 10 बजे आश्रम पर सत्संग-भोजन प्रसादी सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग-प्रवचन	ब्रह्म भोज प्रातः 10 बजे आश्रम पर सायं 5 से 8 बजे तक सत्संग-प्रवचन	प्रातः 6 से 8 बजे तक हवन यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः 8 से 11 बजे तक सत्संग, सत्यनारायण कथा, पाठों के भोग, आम भण्डारा दोपहर 12 बजे सायंकाल 5 से 8 बजे तक सत्संग व पूज्य स्वामी जी पल्लव पाकर महोत्सव का समापन करेंगे.

प्रतिदिन सायंकालीन सत्संग में बाल मण्डली द्वारा रंगारंग प्रस्तुति

पता: प्रेम प्रकाश आश्रम, श्रीपुरा, सिन्धी चौक, कोटा
फोन: 0744-2387573 मोबा. 94141-77781

सेवा में: संत मनोहरलाल प्रेमप्रकाशी
संत श्यामलाल प्रेमप्रकाशी
श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली

प्रेम प्रकाश धाम, मल्कागंज दिल्ली में

स्वामी जयप्रकाशजी महाराज का 44 वाँ वार्षिकोत्सव

गुरुवार 21 नवम्बर से सोमवार 25 नवम्बर 2019 तक

कार्यक्रम

गुरुवार 21 नवम्बर	शुक्रवार 22 नवम्बर	शनिवार 23 नवम्बर	रविवार 24 नवम्बर	सोमवार 25 नवम्बर
प्रातः 8 से 11 बजे तक हवन, श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावन्दन सायं 4 से 8 बजे तक सत्संग, पाठों का आरम्भ	सायं 4 से 8 बजे तक सत्संग, प्रवचन	सायं 4 से 8 बजे तक सत्संग, प्रवचन	प्रातः 8 से 11 बजे सत्संग एवं सायं 4 से 6 बजे तक रासलीला 6 से 8 बजे तक सत्संग, प्रवचन	सायं 4 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग, पाठों का भोग, पल्लव, समापन

पाँचो दिन गुरु महाराज का भण्डारा होगा

सेवा में: स्वामी जयप्रकाश सेवा समिति, मल्कागंज, दिल्ली
मोबाईल 098101-90467 (स्वामी जयदेव जी)

पता: प्रेम प्रकाश धाम (सिन्धी मन्दिर), टेक्सी स्टेण्ड के पास, मल्कागंज, दिल्ली, मोबा. 85279-21530 (संत विनेश)

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

कार्तिकोत्सव

29 अक्टूबर मंगलवार से 12 नवम्बर 2019 मंगलवार तक

विशेष पर्व-उत्सव

29 अक्टूबर मंगलवार	चन्द्रदर्शन, भाईदूज, गोवर्धन पूजा
02 नवम्बर शनिवार	सद्गुरु टेऊँराम चौथ
04 नवम्बर सोमवार	गोपाष्टमी (गो-पूजन)
05 नवम्बर मंगलवार	आँवला नवमी (आँवला पूजन)
08 नवम्बर शुक्रवार	हरि प्रबोधनी एकादशी (भीष्म पँचक दीप प्रज्वलन)
12 नवम्बर मंगलवार	कार्तिक पूर्णिमा, सत्यनारायण

कार्तिक मेला समापन : 12 नवम्बर मंगलवार

कार्यक्रम

सद्गुरु टेऊँराम संकीर्तन (प्रभातफेरी)
प्रातः 6 से 7 बजे तक

प्रार्थना-सत्संग-कार्तिक कथा
प्रातः 7 से 9 बजे तक

भजन-सत्संग-आरती
सायं 4 से 6 बजे तक

प्रभातफेरी, प्रार्थना, सत्संग, पाठों का भोग साहब, सत्यनारायण कथा, आरती एवं विशाल भण्डारा

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में

सद्गुरु टेऊँराम गौशाला मानसरोवर जयपुर में

गोपाष्टमी महोत्सव सोमवार 4 नवम्बर 2019

विशेष आयोजन प्रातः 10 से 12 बजे तक सत्संग, प्रवचन, गौमाता पूजन, आरती एवं विशाल भण्डारा

कार्यक्रम स्थल **सद्गुरु टेऊँराम गौशाला**

वर्धमान सरोवर, मांग्यावास, गणपतपुरा, मुकुण्ड फार्म हाऊस, हीरापथ, मानसरोवर – जयपुर

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन सानिध्यता में

प्रेम प्रकाश आश्रम, मन्दसौर का 10वाँ वार्षिकोत्सव

सोमवार 11 नवम्बर से शुक्रवार 15 नवम्बर 2019 तक

विशेष आयोजन--

गुरुवार 14 नवम्बर 2019 : प्रातः 9 बजे पूज्य सद्गुरु महाराज जी का मंगल आगमन, नाहटा चौराहे (रेल्वे स्टेशन) से भव्य शोभायात्रा, आश्रम पर हवन पूर्णाहुति, ध्वजावंदन, सत्संग, आम भण्डारा + दोपहर 1 बजे से सामूहिक जनेऊ संस्कार एवं बहराणा साहब सायं 5 से 7:30 बजे तक सत्संग एवं आम भण्डारा

शुक्रवार 15 नवम्बर 2019 : प्रातः 7 बजे मूर्ति पूजा, पोशाक पहरान प्रातः 10 से दोपहर 12 बजे तक सत्संग, पाठों के भोग, आम भण्डारा सायं 5 से 7:30 बजे तक सत्संग एवं सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव, 56 भोग + केकप्रसादी + दीप प्रज्वलन, मेले का समापन पल्लव, आम भण्डारा

आयोजन स्थल : श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, चक्रवर्ती कॉलोनी, संत कंवरराम रोड, रेल्वे स्टेशन के पास, मन्दसौर (म. प्र.)

सेवा में : श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, मन्दसौर (म. प्र.) मोबा. 94253 27651

शोक–समाचार

श्री राजू भाग्यवानी

रतलाम। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम रतलाम के नियमित कर्तव्यनिष्ठ सेवाधारी ४८ वर्षीय श्री राजू चिमनलाल भाग्यवानी जी, १ सितम्बर को गुरु चरणाश्रय में अमरापुर लोक सिधारे. हँसमुख, मिलनसारिता के साथ सेवा का ऐसा अनुपम गुण था श्री राजू जी में कि सारा रतलाम शहर उनका प्रशंसक रहा. गुरु दरबार के अलावा नियमित रूप से कुष्ठ आश्रम, अनाथालय, वृद्धालय में जाकर रोगियों बालकों बुजुर्गों की अपनत्व भरी सेवा ही उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहा.

श्री गुरुमुखदास जी

जामनगर। विगत २५ सालों से श्री प्रेम प्रकाश आश्रम की सेवा संभाल करने वाले दादा श्री गुरुमुखदास जी ६२ साल की आयु में १० सितम्बर को गुरुलोक अमरापुर सिधारे. अमरापुरवासी श्री मुरलीधर मक्कड़ के घर आँगन में जन्मे श्री गुरुमुखदास जी माता धनीबाई जो कि आश्रम की देखरेख सेवा संभाल करती थीं- के १९९६ में अमरापुर गमन के पश्चात् आश्रम की सेवा संभाल सत्संग भजन कीर्तन की सेवा करते रहे- सेवा सुमरण संभाल करते हुए ही आपका जीवनोत्सर्ग हुआ. जामनगर के प्रेमी आपको संतस्वरूप मानते थे आपने गृहस्थ धर्म का भी पूर्ण निष्ठा से निर्वहन किया. गुरु दरबार सत्संग सेवा सुमरण के प्रति आपकी लगन अनुकरणीय रहेगी.

श्री विजय पारवानी जी

जयपुर। श्री अमरापुर दरबार के प्रमुख सेवकों में से एक श्री मुरलीधर पारवानी जी के ५४ वर्षीय छोटे भाई, श्री भूरामल जी के सुपुत्र श्री विजय कुमार पारवानी जी, ११ सितम्बर को गुरुलोक अमरापुर सिधारे.

माता सरलादेवी भामरा

मुम्बई। गुरु दरबार एवं गुरुजनों संतों की सेवा में अपने जीवन को सफल करने वाली माता सरलादेवी भामरा धर्मपत्नी अमरापुरवासी श्री मोहनलाल भामरा जी, १५ सितम्बर को गुरुगोद में अमरापुर सिधारीं.

श्री नारायणदास लखवानी जी

जयपुर। श्री अमरापुर दरबार में चप्पलघर पर अपनी निष्काम सेवाएँ देने वाले दादा श्री नारायणदास लखवानी जी ५७ वर्ष की आयु में २१ सितम्बर को गुरुचरणाश्रय में अमरापुर सिधारे. अमरापुरवासी श्री मंघाराम-जमनादेवी के यहाँ जन्मे श्री नारायणदास जी ने बाल्यावस्था से ही गुरु दरबार की सेवा में जुड़कर अपना जीवन सार्थक किया.

श्री मोनू तनवानी जी

इन्दौर/डबरा। प्रेम प्रकाश आश्रम डबरा के प्रमुख सेवाधारी ट्रस्टी श्री हीरानन्द-रेखादेवी तनवानी जी जो अब इन्दौर में रहते हैं- के ३५ वर्षीय युवा पुत्र श्री मोनू तनवानी जी, २३ सितम्बर को गुरुलोक अमरापुर सिधारे. आपका पूरा परिवार निष्ठापूर्वक सेवा सत्संग में भाग लेकर संतों गुरुदेव की सेवा में नित्य नियम से भाग लेता है.

माता पुष्पादेवी कृष्णानी जी

कोटा। प्रेम प्रकाश आश्रम के पुराने सेवाधारी अमरापुरवासी श्री वाशदेव कृष्णानी जी की धर्मपत्नी माता पुष्पादेवी कृष्णानी जी, ६७ वर्ष की आयु में २५ सितम्बर को गुरुलोक में अमरापुर सिधारे.

श्री मेघराज धनकानी जी

जयपुर। अनेक वर्षों तक श्री अमरापुर दरबार एवं प्रेम प्रकाश मण्डल के सभी मेलों पर राधाऊं (रसोईया) की निष्काम भाव से सेवा करने वाले दादा श्री मेघराजमल धनकानी जी, ७६ वर्ष की आयु में १ अक्टूबर को गुरुलोक अमरापुर सिधारे. मंघाराम के नाम से जाने जाने वाले दादा श्री मेघराज जी सिंध में पिता श्री प्रीतमदास माता सीतादेवी के घर आँगन में आये थे. आपने अपना जीवन सेवा करते हुए ही सार्थक किया.

श्री किशनचंद भारवानी जी

हैदराबाद। प्रेम प्रकाश महिला सेवा मण्डली हैदराबाद की मुख्य सेविका माता नयना सब्दानी जी के पिता प्रेमप्रकाशी श्री किशनचंद भारवानी जी ७५ वर्ष की आयु में १ अक्टूबर को गुरुलोक अमरापुर सिधारे. आपका पूरा परिवार गुरुमहाराज संतों का अनन्य प्रेमी है.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्यश्री सद्गुरु देव स्वामी टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से प्रार्थना की गई (पल्लव पाया).

जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है

जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है
दौलत जो बख्शी नाम की, अहसान कर दिया है
अहसान कर दिया है, मेरा नाम कर दिया है
जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है

जिसको भी तूने थामा, समझो वो तर गया है
नज़रे करम ने तेरी, इन्सान कर दिया है
इन्सान कर दिया है, मेरा नाम कर दिया है
जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है

महफिल वही है जिसमें, चर्चा हो तेरी सत्गुरु
अपना वही है जिसने, तेरा जिक्र किया है
तेरा जिक्र किया है, मुझे बे-फिकर किया है
जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है

जिसने भी पी लिया है, तेरे नाम का प्याला
उसको नहीं खबर है, मेरा दिल गया किधर है
मेरा दिल गया उधर है, मेरा सत्गुरु जिधर है
जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है

तेरी चरण धूल जिसके, मस्तक को छू गई है
नज़रें पलट गई हैं, जीवन सँवर गया है
जीवन सँवर गया है, जीवन निखर गया है
जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है

भूलेंगे कैसे अब हम, चौखट को तेरे दर की
तेरी रहमतों ने 'वधवा' को, अपना ही कर लिया है
अपना ही कर लिया है, खुशियों से भर दिया है
जीवन में, मेरे सत्गुरु, क्या, रंग भर दिया है

–प्रेमप्रकाशी हरेकश वधवा, समालखा (हरियाणा)

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-185

1		2	ॐ	3		4	5
	ॐ	6	7		ॐ	8	
9	10			ॐ	11	ॐ	
12		ॐ	13	14		15	
ॐ	16	17	ॐ	18			ॐ
19			20	ॐ	ॐ	21	22
23		ॐ	24	25		ॐ	
	ॐ	26			ॐ	27	

बाएँ से दाएँ : प्रस्तुति : सुधा जौहरी, जयपुर

01. विमान जिसमें भगवान राम सीता लक्ष्मण लंका से अयोध्या आए. (3)
03. रामायण के कथा की नाटक रूप में प्रस्तुति. (2.2), 06. पूर्णिमा का अपभ्रंश. (3)
08. सुरक्षित रखना; संकट से बचाना; प्रभु भक्त की ..... करते हैं; हिफ़ाज़त. (2)
09. कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी के पति. (4)
12. निर्धन; साधनहीन; जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे .... चले सिर छत्र धराई. (2)
13. सिख धर्म के प्रवर्तक. (3.2), 16. वृषभानुजा; कृष्ण प्रिया. (2), 18. भीत; लंकिनी लंका की .... पर चढ़ कर पहरा देती थी. (3), 19. धर्म का प्रचार करने वाला. (4)
21. ख़ैरात; 'सत्गुरु मुझको .... दे, प्रेम भक्ति विश्वास. (2), 23. रवि; भास्कर. (2)
24. वृक्ष जिसकी पूजा करते हैं. (3), 26. सिद्ध हस्त; संकट मुक्त; 'पर उपदेश .... बहुतेरे. (3)
27. पाँच तत्वों में से एक; 'साक्षी चेतन रम रहा, ... थल पुनि आकाश'. (2)

ऊपर से नीचे :

01. इन्द्र का एक नाम. (4)
02. कर्पूर; पूजा में रखते हैं व हवन में इससे अग्नि प्रज्वलित करते हैं. (3), 03. सीता पति. (2)
04. कपड़ा फाड़ कर पट्टी बनाना जैसे द्रौपदी ने अपना चीड़ फाड़ कर श्रीकृष्ण की उँगली में बाँधी. (2)
05. पाँडवों को जीवित जलाने हेतु दुर्योधन ने बनवाया था. (4),
07. नासिका का छिद्र जिसमें सांस संतुलित कर अनुलोम विलोम करते हैं. (3), 10. चार मठों की स्थापना करने वाले गुरु. (5), 11. पक्षी जो रात्रि में अपनी मादा से अलग रहता है. (3)
14. गंगा अति पावन ..... है; सरिता. (2), 15. सरस्वती. (3), 17. तरल पदार्थ का एक दिशा में गिरना; शिव का जल व दूध की .... से अभिषेक करते हैं. (2), 19. पुष्प; कुसुम; फूल. (3), 20. हनुमान; वानरों के ईश. (3), 22. माद्री पुत्र. (3), 25. समय का अति छोटा भाग; 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, ... में प्रलय होगी बहुरि करेगो कब. (2)

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-184 का सही हल

1 ना	ग	2 पँ	3 च	4 मी	ॐ	5 म	त्स्य
ना	ॐ	6 च	तु	रा	7 न	न	ॐ
ॐ	8 वा	न	र	ॐ	9 व	न	10 ज
ॐ	11 म	द	ॐ	12 रा	धा	ॐ	न्मे
13 जा	प	ॐ	14 भां	जा	ॐ	15 का	ज
16 म	न्थ	न	ॐ	17 शि	वा	ल	य
वं	ॐ	ॐ	18 ह	वि	ॐ	च	ॐ
19 त	था	ग	त	ॐ	20 वि	क्र	म

वर्गपहेली–184 के सही हल भेजने वालों के नाम– **जयपुर से** प्रेमप्रकाशी जतिन, सोनिया, सारिका, कविता, अशोक पुरसानी, **मुम्बई से** प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार मोटवानी, **विजयवाड़ा से** प्रेमप्रकाशी गुलाबराय लालवानी, **गांधीधाम से** प्रेमप्रकाशी रमेश ताराचंद बूलचंदानी, जयंती भगतानी, भूमिका माखीजानी, **दिल्ली से** प्रेमप्रकाशी संध्या माखीजा, वन्दना चन्दर लाडवानी, **दल्ली राजहरा से** प्रेमप्रकाशी गुरुमुखदास शहानी, **जोधपुर से** प्रेमप्रकाशी भावना मनोहरलाल बादलानी, गीता परी धर्मानी, राधा सोनिया सखरानी, माया सखरानी, **चाम्पा से** प्रेमप्रकाशी वरियलदास, **कोरबा से** प्रेमप्रकाशी लकी सचदेव, **इन्दौर से** प्रेमप्रकाशी प्रीती तलरेजा, कविता लोहानी, **पलवल से** प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार सरदाना, नितिन अरोड़ा, **मंदसौर से** प्रेमप्रकाशी मंजू लक्ष्मणदास होतवानी, **वाराणसी से** प्रेमप्रकाशी लीना भगवानदास जाजानी, **भानुप्रतापपुर से** प्रेमप्रकाशी मायादेवी, **अहमदाबाद से** प्रेमप्रकाशी यशवन्त, रश्मि कलवानी, राधा गुरुदासानी.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम

15 से 16 अक्टूबर 2019 तक	**हिसार** (वार्षिकोत्सव)	☎ 01662–272049
17 से 20 अक्टूबर 2019 तक	**पलवल** (वार्षिकोत्सव)	☎ 01275–252826
21 से 22 अक्टूबर 2019 तक	**हथीन** (वार्षिकोत्सव)	☎ 099717–77638, 94166–36529
23 से 24 अक्टूबर 2019 तक	**पिनगवाँ** (वार्षिकोत्सव)	☎ 099910–91078
25 से 28 अक्टूबर 2019 तक	**जयपुर** (दीपावली)	☎ 0141–2372424, 2372423
29 अक्टूबर 2019	**यात्रा**	☎ 098290–14850
30 अक्टूबर से 1 नव. 2019 तक	**पूना** (वार्षिकोत्सव–कार्तिकोत्सव)	☎ 080555–27272
02 से 3 नवम्बर 2019 तक	**पिम्परी** (वार्षिकोत्सव–कार्तिकोत्सव)	☎ 020–27410487
04 से 6 नवम्बर 2019 तक	**जयपुर** (कार्तिकोत्सव–गोपाष्टमी)	☎ 0141–2372424, 2372423
07 से 8 नवम्बर 2019 तक	**सीकर** (कार्तिकोत्सव–वार्षिकोत्सव)	☎ 094142–88017
09 से 12 नवम्बर 2019 तक	**कोटा** (कार्तिकोत्सव–वार्षिकोत्सव)	☎ 094141–77781
13 नवम्बर 2019	**भवानीमण्डी** (वार्षिकोत्सव)	☎ 094141–77781
14 से 15 नवम्बर 2019 तक	**मंदसौर** (वार्षिकोत्सव)	☎ 094253–27651
16 से 17 नवम्बर 2019 तक	**भीलवाड़ा**	☎ 098292–84799
18 से 20 नवम्बर 2019 तक	**जयपुर**	☎ 0141–2372424, 2372423
21 से 25 नवम्बर 2019 तक	**दिल्ली** (स्वामी जयप्रकाश वार्षिकोत्सव)	☎ 098101–90467, 85279–21530
26 से 27 नवम्बर 2019 तक	**गया**	☎ 098290–14850
28 से 29 नवम्बर 2019 तक	**काशी वाराणसी** (वार्षिकोत्सव)	☎ 094558–96980, 97933–60050
30 नवम्बर 2019	**प्रयागराज**	☎ 070812–19000, 94528–92996
01 दिसम्बर से 2 दिस. 2019 तक	**फैजाबाद अयोध्या** (वार्षिकोत्सव)	☎ 091700–20295, 81032–31333
03 से 4 दिसम्बर 2019 तक	**लखनऊ** (वार्षिकोत्सव)	☎ 070812–19000, 94500–26893
05 से 7 दिसम्बर 2019 तक	**कानपुर** (वार्षिकोत्सव)	☎ 070812–19000
08 दिसम्बर से 10 दिसम्बर 2019	**अनिर्णीत**	☎ 098290–14850
11 दिसम्बर से 13 दिसम्बर 2019 तक	**सूरत (स्वामी बसंतराम वर्सी)**	☎ 093770–65000

आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन-चरित्रामृत से प्रश्नोत्तरात्मक प्रसंग

जिज्ञासा

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

प्रश्न : सत्संग की महिमा क्या है?

उत्तर : सद्गुरु महाराज जी सत्संग की महिमा के विषय पर दो-तीन भजन गाकर सामी साहब जी (जो सिन्ध के महान् सन्त थे) के निम्नलिखित पदों का मधुर गान कर कहने लगे कि-

पद : **आहिनि अगम अपारु, राहूँ राम मिलण जूं।**
तिनि सभिनी में हिकिड़ी, साध संगति निरिवारु।।
सामी मिलु तहींसां, रखी प्रेमु पियारु।
त भगवत जो दीदारु, डिसीं भेद भरम रे।।

परम पद की प्राप्ति का एक ही सरल मार्ग है, वो है- सत्संग. वैसे तो जप-तप, व्रत-नेम, सन्ध्या-गायत्री, पाठ-पूजा, यज्ञ-दान और तीर्थ-स्नान इत्यादि अनेक मार्ग हैं. परन्तु सर्वोत्कृष्ट एवं निष्कण्टक मार्ग तो सत्संग ही है. इस विषय में भक्त उद्धव और भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र जी का संवाद सुनाते हुए श्री गुरु महाराज जी कहने लगे कि सत्संग के विषय में उद्धव द्वारा पूछे जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण जी कहने लगे कि हे उद्धव!

श्लोक : **न रोधयति मां योगो, न सांख्यं धर्म एव च।**
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो, नेष्टापूर्तं न दक्षिणा।
व्रतानि यज्ञश्चन्दांसि, तीर्थानि नियमा यमाः।
यथा वरन्धे सत्संगः, सर्वसंगापहो हि माम्।।

अर्थात्- न योग, न सांख्य, न धर्म पालन, न स्वाध्याय, न तपस्या, न त्याग, न इष्ट, न पूर्त. (दान के दो भेद शास्त्रों में बताए गये हैं- १. इष्ट, २. पूर्त. यथा-

श्लोक : **अग्निहोत्रं तपः सत्यं, वेदानां चैव पालनम्।**
आतिथ्यं वैश्वदेवश्च, इष्टमित्यभिधीयते।।

(अत्रि स्मृतिः)

अर्थात्- हवन करना, तप करना, सत्य बोलना और वेदों का पालन करना, अतिथि-सत्कार करना तथा वैश्वदेव की पूजा करना इष्ट दान कहलाता है. और-

श्लोक : **वापीकूपतडागादि, देवतायतनानि च।**
अन्नप्रदानमारामः, पूर्तमित्यभिधीयते।।

(अत्रि स्मृतिः)

अर्थात्- बावली, कुँआ, बड़ा तालाब, देव मंदिर, अन्नदान, बाग निर्माण करना, सदावर्त चलाना आदि पूर्त दान कहलाता है और ग्रहण काल में सूर्य की संक्रांति, द्वादशी आदि तिथियों पर दिया हुआ दान भी पूर्त कहलाता है. न दक्षिणा, न व्रत, न यज्ञ, न वेद, न तीर्थ, न यम, न नियम से ही वैसा प्रसन्न होता हूँ जैसा कि मैं सत्संग से प्रसन्न होता हूँ. हे उद्धव! और क्या कहूँ? वृत्रासुर, प्रहलाद, बलि, बाणासुर, विभीषण आदि असुर व राक्षस तुलाधार वैश्य, धर्म व्याध आदि मनुष्य हनुमान, सुग्रीव आदि वानर, गजेन्द्र, जटायु, ब्रज की गोपियाँ, जलचर, थलचर, नभचर, निशिचर प्रभृति सत्संग द्वारा ही मुझे प्राप्त कर सके हैं. उन जीवों ने न तो वेदों का स्वाध्याय, न महापुरुषों की सेवा, न व्रत, न कोई तपस्या ही की थी. बस! केवल सत्संग के प्रभाव से ही वे मुझे प्राप्त हो गये थे.

श्लोक : **ते नाधीत श्रुतिगणा, नोपासितमहत्तमाः।।**
अव्रतातप्ततपसः, सत्संगान्मामुपागताः।।

हे उद्धव! आपको कहाँ तक बताऊँ?

श्लोक : **केवलेन हि भावेन, गोपे गावो नगा मृगाः।**
येऽन्ये मूढधियो नागाः, सिद्धा मामीयुरंजसा।।

अर्थात्- गोपियाँ, गायें, यमलार्जुन आदि वृक्ष, ब्रज के हरिण आदि पशु, कालियनाग, ये तो साधन-साध्य के सम्बन्ध से सर्वथा ही मूढ़ बुद्धि थे, पर केवल प्रेमपूर्ण भाव से ही वे मुझे पाकर कृतकृत्य हो गये.

श्लोक : **यं न योगेन सांख्येन, दान व्रत तपोऽध्वरैः।**
व्याख्या स्वाध्याय संन्यासैः, प्राप्नुयाद् यत्नवानपि।।

अर्थात्- योग, सांख्य, दान, व्रत, तपस्या, यज्ञ, श्रुतियों की व्याख्या, स्वाध्याय व संन्यास प्रभृति साधनों द्वारा यत्न करने पर भी मेरी प्राप्ति नहीं हो सकती. मैं तो केवल सत्संग द्वारा ही सुलभ हो सकता हूँ.

इतना सुनाकर सद्गुरु महाराज जी कहने लगे कि सत्संग ही एक सीधा व सरल मार्ग है. इस विशाल सत्संग पथ द्वारा यह जीव जो संसार के दुःखों के कारण अत्यन्त श्रान्त-क्लान्त हो रहा है, वह बिना बाधा और अवरोध के अपने लक्ष्य अमर धाम को अनायास ही प्राप्त कर लेता है. अतः सत्संग से प्यार करना सब जीवों का परम कर्तव्य है.

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

‘ब्रह्मदर्शनी’

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं सितम्बर २०१६ अंक खां अगिते- ।। दशपदी-12 ।।

पारब्रह्म बिम्ब दर्पन माया, जान जीव यह ताँकी छाया।
जे चाहो सुख मान बड़ाई, तो सब अर्पो बिम्ब के ताईं।
बिम्ब अर्पे बिन छाय न पावे, बात यही सत् वेद बतावे।
मूल सिंचे बिन शाख न फूले, हरि तज हौं मैं कर क्यों भूले।
मैं मेरा हरि अर्पन कीजे, कह टेऊँ निज सुख को लीजे।। 7 ।।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजनि तत्त्वज्ञान, ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान जे आधार ते उपदेशु कंदे चवनि था, ‘माया आईनो/दर्पणु आहे, जंहिं में परब्रह्म जो प्रतिम्बिबु/अक्सु पवे थो. हीउ जगतु या जीवु उन जी छाया/पाछो आहे. हे मनुष ! अगर तूं सुखु, इज़त-मानु ऐं वडाई/वडपणो चाहीं थो त पंहिंजो सभु- कुझु बिम्ब/अक्स (परब्रह्म) खे अर्पणु करे छडि. ब्रह्म खे अर्पण बिना जसु कोन मिली सघंदो. ऐं इहा ई सची गाल्हि वेद बुधाइनि था, वण में पाड़/जड़ खे पाणी डियण खां सवाइ वण जूं शाखाऊं/टारियूं सायूं कोन थी सघंदियूं आहिनि. हे जीव ! तूं हरीअ खे, परमेश्वर खे त्यागे, ‘मां’, ‘मां’ करे छो थो भगवान खे विसारे छडीं ?,’ स्वामी जनि चवनि था, ‘तूं ‘मां’ ऐं ‘मुंहिंजो ’परमेश्वर/ब्रह्म खे अर्पणु करे सुखु प्रापति करि.’

वेदांत अनुसार सभु कुझु सिर्फु ब्रह्मु ई आहे. ब्रह्मु सत्य/सचु आहे. ब्रह्मु ईश्वरु आहे. ब्रह्म खां सवाइ बिए कंहिंजो बि अस्तित्वु/वजूदु नाहे. ईश्वर खां सवाइ सृष्टीअ में बिए कंहिं हंधि कुझु नाहे. हीउ नाम ऐं रूपु धारणु कंदडु संसारु इन ई सत्ता ते हिकु मायावी/काल्पनिक आरोपणु आहे. ब्रह्मु बेअन्तु, सर्वव्यापी ऐं अविकारी आहे. उपनिषद अनुसार-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

अर्थात् **ॐ,** हू अनंत आहे, हीउ अनंत आहे. अनंत मां अनंतु आहे. अनंत मां अनंतु कढी छडिजे त अनंतु ई बचंदो.

ब्रह्मु सभिनी में ऊचो/वडो आहे, पूरनु आहे, इन्सानी बुद्धीअ जी पकड़ खां परे आहे. हीउ विश्वु ब्रह्म मां ई उत्पन्नु थियो आहे. इन ब्रह्म खे पंहिंजो सभु कुझु अर्पणु करणु घुरिजे.

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : श्रीचन्द पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सत्री प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, कार्यालय : प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474 001 18 से प्रकाशित किया गया।
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 व सायं 4 से 7 बजे तक)
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी प्रबन्ध सम्पादक : श्रीचन्द पंजवानी

RNI MPHIN/2008/25627
डाक रजि. ग्वालियर सम्भाग- 161/2017-19
(R.M.S. Posting date Every Month 15th)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** *लिखकर उसे* **BOLD** *करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.* *- व्यवस्थापक*

टीवी चैनलों पर सद्गुरु महाराज जी के दिव्य सत्संग-दर्शन का लाभ लें

प्रति रविवार

ईश्वर टीवी चैनल
सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक

संस्कार टीवी चैनल
अब बदले समय पर सायं 7 से 7:20 तक